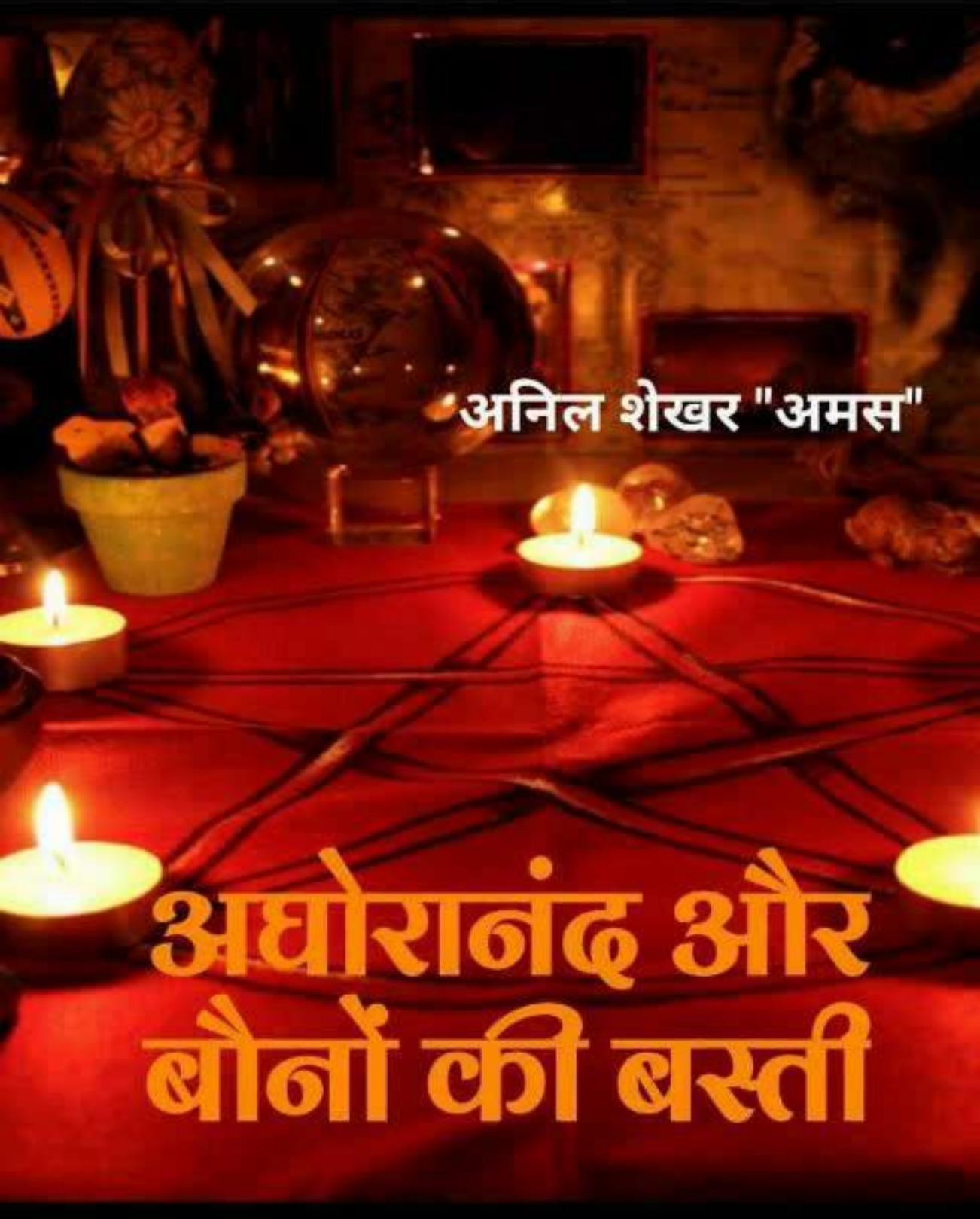
अनिल शेखर "अमस"
अघोरानंद और
बौनों की बस्ती

प्रकार की प्रजातियां मानी गई है । जिसमें यक्ष, गंधर्व, नाग, किन्नर सौम्य प्रवृत्ति के माने गए हैं । इनका भी अपना-अपना लोक होता है । भूत , प्रेत, पिशाच आदि भी अपने-अपने लोक में रहते हैं, ऐसा माना जाता है । इनमें से किसी की भी प्रमाणिकता या अस्तित्व को सिद्ध करने वाली कोई वैज्ञानिक खोज अभी तक नहीं हो पाई है ।

लेकिन .... इनके अस्तित्व को स्वीकारा जाता है । चाहे वह भारतीय साहित्य हो या किसी अन्य देश का साहित्य । उनमें किसी न किसी प्रकार के मानवेत्तर प्राणियों के अस्तित्व की व्याख्या हमें मिलती है । इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए आप को आमंत्रित करता हूं ... एक काल्पनिक लोक में विचरण करने के लिए.....

आप सभी अपना स्नेह और आशीर्वाद बनाए रखेंगे इसी आशा के साथ .....

आपका

अनिल शेखर

अघोरानंद और बौनों की बस्ती

उस दिन किसी विशेष कार्य से बस्तर की ओर जाने का कार्यक्रम बन गया था । बस्तर के विषय में अधिकांश लोग यह मानते हैं कि वह एक नक्सल प्रभावित इलाका है । बेहद पिछड़ा हुआ है इत्यादि इत्यादि ... लेकिन वास्तव में यह बस्तर का और उसके अस्तित्व का एक पहलू है जो ज्यादा प्रचारित हो गया है.....

बस्तर का अपना एक अद्भुत प्राकृतिक सौंदर्य है । वहां का मौसम बेहद सुहावना होता है । घने सागौन के जंगलों से भरा हुआ है । लकड़ियों में सबसे महंगी लकड़ी शीशम की मानी जाती है । बस्तर के जंगलों में शीशम की लकड़ियां भी बहुतायत में मिलती है । यहां आदिवासी जनजाति के लोग ज्यादा रहते हैं । जो अपने आप में बेहद सरल सहज और आसानी से किसी के भी ऊपर विश्वास कर लेने वाले होते हैं....

उनकी इस सरलता और सहजता का बाहर से आए हुए लोगों ने बहुत लाभ उठाया है और शायद इसकी

प्रतिक्रिया के रुप में नक्सलवाद भी यहां पर पनप गया .....

बस्तर के लोग किसी वस्तु को धन देकर खरीदने पर विश्वास नहीं रखते थे , बल्कि वे वस्तु विनिमय की प्रथा का पालन करते थे । अर्थात अगर आप एक बोरा नमक उनको देते थे तो उसके बदले में वह कई बार आपको एक बोरा चिरौंजी दे देते । जिसका मूल्य नमक की तुलना में कम से कम 100 गुना अवश्य होगा । लेकिन वह अपनी सरलता और सहजता, जिसे हम अज्ञानता भी कह सकते हैं , के कारण एक बोरा नमक की जगह में एक बोरा चिरौंजी सहजता से देकर निकल जाते थे ।

जो बाहरी लोग वहां पर आकर बसे । विशेष रुप से दंडकारण्य प्रोजेक्ट के तहत ... उन लोगों ने उनकी सरलता का बहुत लाभ उठाया और उस के बल पर ढेर सारा पैसा भी कमाया । वैसे ही एक परिचित चटर्जी बाबू ने अपने किसी काम के लिए मुझे बुलाया था । वह किराना दुकान चलाते थे और इसी प्रकार से वस्तु विनिमय वाले कार्यक्रम के चलते काफी धनाढ्य बन चुके थे ।

मैं उन्हीं से मिलने अपनी मारुति 800 कार में जा रहा था । वे बस्तर के कोंडागांव नामक शहर में रहते थे । उसी ओर मेरी यात्रा जारी थी । मैं अकेला था । रास्ते में घाटी पड़ती है । जिसे केशकाल घाटी कहा जाता है । यह घाटी बेहद घुमावदार है और बेहद खतरनाक भी .... अगर किसी मोड़ पर गाड़ी फिसल जाए तो आदमी और गाड़ी दोनों का काम तमाम हो जाए ....
एक तरफ ऊंची पहाड़ियां हैं और दूसरी तरफ काफी गहरी खाई.....

मैं मध्यम गति से उस घाटी से गुजर रहा था । आमतौर पर घाटी में काफी गाड़ियां आती जाती रहती हैं लेकिन उस दिन न जाने क्या बात थी कि घाटी में अकेला मैं ही गुजर रहा था ...
न सामने से कोई गाड़ी आती हुई दिख रही थी और ना ही कोई गाड़ी मेरे आगे या पीछे चल रही थी....

एक मोड़ पार करके जैसे ही मैं आगे बढ़ा मुझे सड़क पर 3-4 छोटी-छोटी आकृतियां दिखाई दी । मैंने पूरी ताकत से ब्रेक दे मारा । बड़ी मुश्किल से उनसे 6-8 इंच की दूरी पर जाकर मेरी कार रुकी ।

मैं कार से नीचे उतरा । मुझे लग रहा था कि जरूर वह कार के चक्के की नीचे आ गई हो । सौभाग्य से ऐसा नहीं हुआ था । वे आकृतियाँ बिलकुल सही सलामत थी ... लेकिन डर कर एक दूसरे के साथ चिपक गई थी.....

थोड़ी देर में वे अलग हुए और उनको देखकर मेरी आंखें फटी की फटी रह गई । वे छोटे छोटे इंसान थे । लगभग एक से डेढ़ फुट की ऊंचाई के.....

जैसा कि मैंने बताया बाई तरफ ऊंची ऊंची पहाड़ियां थी और दाईं तरफ गहरी खाई । उन लोगों ने मुझसे पहाड़ी की तरफ इशारा किया ... लेकिन मैं उनकी बात समझ नहीं पाया । फिर वे मुझे पकड़कर अपनी तरफ खींचने लगे तब मुझे समझ में आया कि शायद वह मुझे कहीं ले जाना चाहते थे । घाटी में आप बीच में गाड़ी नहीं छोड़ सकते । ऐसा करने से रास्ता ब्लॉक हो जाता है । लगभग 10 फुट आगे पहाड़ी में एक छोटी सी गुफा जैसी जगह बनी हुई थी । जो लगभग 15 फीट चौड़ी और करीब-करीब उतनी ही लंबी भी थी । वे मुझे

खींचकर वहां तक ले गए । संभवतः वह यह बताना चाहते होंगे कि गाड़ी मैं वहां लाकर रख सकता हूं.....

मैं वापस अपनी गाड़ी की ओर चल पड़ा । वे लोग वही उस गुफा के दरवाजे पर ही खड़े रहे । मैंने गाड़ी ला कर उस गुफा के अंदर खड़ी कर दी । उन्होंने मुझे अपने साथ आने का इशारा किया । मैं उनके पीछे पीछे चल पड़ा । गुफा के बाजू से एक छोटी सी पगडंडी सी चल रही थी । जो सड़क के किनारे किनारे आगे बढ़ रही थी । थोड़ा आगे जाने पर सड़क दाहिनी ओर मुड़ गई और पहाड़ी की ओर चली गई । उसी पगडंडी पर वे लोग आगे आगे चलते गए और उनके पीछे पीछे मैं चलता गया ।

आगे पहाड़ों के बीच में एक छोटी सी दरार सी बनी हुई थी । दरार लगभग चार पांच फीट ऊंची रही होगी और एक आदमी मुश्किल से उसमें से सरक कर अंदर जा सकता था । बोने छोटे छोटे थे इसलिए वह बड़ी आसानी से उसके अंदर चले गए । मैं बाहर खड़े होकर कुछ देर सोचता रहा कि इस माया जाल में फंसू या ना फसू । थोड़ी देर सोच कर मैंने निर्णय लिया कि जब भगवती यहां तक लेकर आई है तो आगे भी ध्यान रखेगी

। इस विचार के आते ही मैं झुक कर उस दरार के अंदर से होता हुआ अंदर घुस गया ।

अंदर काफी अंधेरा था । बौनों ने मशाल जैसी कोई चीज जलाई और छोटे टोर्च जैसी रोशनी वहां फैल गयी । वह लगभग एक डेढ़ फुट चौड़ी और करीब करीब 25 फीट ऊंची दरार थी । जिसमें से होकर हम गुजर रहे थे । संभवत: पहाड़ के बीच कटान से किसी प्रकार उसका निर्माण हुआ होगा । उसके बीच से गुजरते समय शोले फिल्म की चंबल की घाटियों वाली फीलिंग आ रही थी.....

लगभग आधा किलोमीटर तक हम लोग उस तरह से होकर चले होंगे उसके बाद एक खुला इलाका सामने दिखाई देने लगा ....

जो किसी कटोरी की तरह था ...

चारों तरफ पहाड़ थे और बीच में तराई जैसा इलाका । छोटी-छोटी झोपड़ियां बनी हुई थी और हजारों बोने

इधर-उधर घूम रहे थे । बौनों का एक पूरा संसार बसा हुआ था ।

यह सृष्टि इतनी रहस्यमय है कि उसके रहस्य की कोई सीमा नहीं है ....
वैसे ही एक रहस्यमय संसार से मैं परिचित हो रहा था ।
एक अद्भुत रहस्यमय संसार .....
डेढ़ फुट के इंसानों की एक पूरी की पूरी बस्ती सामने थी । घर झोपड़ियों जैसे थे । छोटे-छोटे लगभग 3 से 4 फीट ऊंची । उसके बीच में एक लगभग 2 फीट ऊंची पहाड़ी चट्टान थी । जो करीब 20 बाय 20 फीट चौड़ी समतल सी थी । उसे शायद सार्वजनिक स्टेज की तरह इस्तेमाल किया जाता रहा होगा । उसमें एक बौना खड़ा होकर कुछ ड्रम जैसी चीज बजा रहा था ।

सारे लोग मुझे आंख फाड़ फाड़ कर देख रहे थे । यही नहीं वे मुझे देखते ही सहम कर एक तरफ हो जाते थे और रास्ता छोड़ देते थे । आप अंदाज लगा लीजिए कि कम से कम चार बौने एक के ऊपर एक खड़े होंगे तब वह मेरे बराबर पहुंच पाते .... तो उनकी नजरों में मैं एक

राक्षस के जैसा .... विशालकाय प्राणी था.... जिससे डरना अवश्यंभावी था...

वे बौने लगभग दौड़ते हुए आगे चल रहे थे और मैं धीरे-धीरे उन दोनों के पीछे पीछे आगे बढ़ता चला गया। जब उस स्टेज के पास पहुंचा तो देखा स्टेज के ऊपर एक बौना बुजुर्ग बैठा हुआ था। उसकी लंबाई भी एक डेढ़ फिट रही होगी। उसके बाल काफी लंबे लंबे थे और कमर तक आ रहे थे। उसके गले में अजीब अजीब किस्म की मालाएं पड़ी हुई थी। माथे पर नीले रंग का टीका लगा हुआ था। वह भी सारे बोनो की तरह निर्वस्त्र था। वे बौने जाकर उसके सामने खड़े हो गए और सम्मान के साथ प्रणाम किया। वह आंखें बंद करके बैठा हुआ था। दोनों के द्वारा प्रणाम करने के लगभग 10 मिनट के बाद उसने अपनी आंखें खोली।

उसकी आंखें गहरे नीले रंग की थी .....
वैसी आंखें मैंने आज तक कभी किसी की नहीं देखी।
बिल्कुल रहस्यमय ...

ऐसी आँखें ..... जिनको देखने के बाद आँखें वहीं अटक जाती थीं। ऐसा लगता था जैसे नजर किसी चुंबक की तरह उससे चिपक गयी हों।

उसने आंखों से उन दोनों को जाने का इशारा किया वे तुरंत चले गए। उसने मुझे बैठने का इशारा किया। जैसा कि मैंने बताया था कि उसकी आंखें बेहद सम्मोहक और रहस्यमय थी। मैं उसके सम्मोहन में बंध चुका था। उसने सिर्फ अपनी पलकों का इशारा किया और मैं उसकी बात समझ कर बैठ गया। या यूं कह लीजिए कि उसके निर्देशों का पालन करने के लिए मैं विवश था।

मैं वहीं जमीन पर बैठ गया और बैठने के बाद मेरा सिर उसके सर के करीब तक जा रहा था। उसके बाद उसने मेरी तरफ देखकर कुछ बुदबुदाया। जैसा कि मैंने बताया था कि मेरी आंखें उसकी आंखों से अलग नहीं हो पा रही थी ऐसा लग रहा था जैसे कोई चीज हमारी आंखों को आपस में जुड़े हुए हैं।

लगभग 1 या 2 मिनट बीते होंगे और उसके बाद मुझे अपने मस्तिष्क के अंदर कुछ चीजें सुनाई देती हुई कह लें या समझ में आती हुई महसूस होने लगी ।

यह बात सुनने में अजीब जरूर लग सकती है....
लेकिन ....
उस बोने के होठ नहीं खुल रहे थे ..... वह कुछ भी नहीं बोल रहा था ..... लेकिन मैं अपने मस्तिष्क में उसकी बात को समझ रहा था । एक प्रकार की टेलीपैथी जैसी कोई विद्या रही होगी । टेलीपैथी का मतलब होता है बिना बात किए अपनी बात को दूसरे के मस्तिष्क में प्रक्षेपित कर देना । विज्ञान कथाओं में इसका वर्णन अक्सर देखने को मिलता है । आम जीवन में भी कई बार इसका अनुभव होता है । विशेष तौर से अगर आप देखें तो माताओं को बच्चों के विषय में इस प्रकार के अनुभव बेहद सहजता से हो जाते हैं । अगर बच्चा छोटा हो तो उसे किस चीज की जरूरत है, भूख लगी है, या नहीं है, यह सब उसकी माता बिना उसके बोले समझ जाती है । यह भी एक प्रकार की टेलीपैथी ही है ।

मैंने मन में यह विचार किया और पूछा - बाबा मैं आपकी बात को कैसे समझ पा रहा हूं ।

तुरंत मेरे मस्तिष्क में उनका जवाब आया - यह अष्ट सिद्धियों में से एक है । तुम जानते ही होगे की साधना और सिद्धियों में अष्ट सिद्धियों का वर्णन विशेष रूप से किया जाता है ।

मैंने कहा - कृपया थोड़ा विस्तार से बताइए । मैं आपकी बात को समझ नहीं पा रहा हूं ।

उन्होंने बताना प्रारंभ किया - देखो, साधना की किताबों और विशेष रूप से हनुमान चालीसा में कही जाने वाली अष्ट सिद्धियां आठ प्रकार की सिद्धियां होती हैं । जिनका विवरण मैं तुम को बताता हूं :-

1 - अणिमा

अष्ट सिद्धियों में सबसे पहली सिद्धि है अणिमा, जिसका अर्थ है अपने शरीर को एक अणु के समान सूक्ष्मता प्रदान कर पाने की शक्ति । अणु या एटम का आकार बहुत छोटा होता है । जिसे सूक्ष्मदर्शी यंत्र या माइक्रोस्कोप से देखा जाता है । जिस तरह नग्न आंखों

से आप अणु को नहीं देख सकते उसी तरह अणिमा सिद्धि को प्राप्त करने के बाद कोई भी व्यक्ति आपको देख नहीं पाएगा । आप जब चाहे अपने शरीर को अणु के सामान सूक्ष्म या छोटा कर सकते हैं। वैसे स्थिति में सामान्य आंखों से आपको देख पाना संभव नहीं होगा ।

2- महिमा

अष्ट सिद्धियों में अगली सिद्धि होती है महिमा । अणिमा के ठीक उलट महिमा सिद्धि प्राप्त करने के बाद आप जब चाहे अपने शरीर को अपनी इच्छा अनुसार बड़ा कर सकते हैं । यूं कह लीजिए कि असीमित विशालता प्रदान कर सकते हैं । आप अपने शरीर को किसी भी सीमा तक फैला सकते हैं । इसका वर्णन रामायण में सुरसा वाले प्रसंग में आता है । जब हनुमान जी ने विशाल आकार ग्रहण कर लिया था और फिर सूक्ष्म रूप धारण करके सुरसा के मुख में घुसकर वापस निकल आए थे ।

3 - गरिमा

विज्ञान कहता है कि अणु का अधिकांश हिस्सा खाली है । बीच में एक नाभिक है और उससे काफी दूरी पर

इलेक्ट्रॉन चक्कर लगाते रहते हैं। इसके बीच में खाली जगह है। जिस तत्व में यह खाली जगह कम होती है अर्थात इलेक्ट्रॉन और प्रोटोन की मात्रा ज्यादा होती है वह ज्यादा घना या गरिमा युक्त माना जाता है। यही घनत्व उस पदार्थ के भार को निश्चित करता है। जितना घना पदार्थ उतना भारी। गरिमा सिद्धि से आप अपने शरीर के भार को भी असीमित तरीके से बढ़ा सकते हैं। आपका आकार तो उतना ही रहेगा लेकिन आपके शरीर का भार इतना बढ़ जाएगा कि कोई आपको हिला तक नहीं पाएगा।

4 - लघिमा

आप का भार आपको भूमि के साथ जोड़ कर रखता है। जितना भारी शरीर होगा या जितनी भारी चीज होगी वह जमीन पर उतनी ही ज्यादा कठोरता के साथ चिपकी रहेगी। इस वजह से उसका ऊपर उठना मुश्किल होगा। हवाई जहाज आसमान में उड़ता है। इसके लिए उसके शरीर को अर्थात बॉडी को ऐसे पदार्थों से बनाया जाता है जो बेहद हल्के और मजबूत होते हैं। यदि उसका भार ज्यादा होगा तो वह अपने

ही भार की वजह से जमीन पर बैठ जाएगा और उड़ नहीं पाएगा । लघिमा सिद्धि के माध्यम से आपका शरीर इतना हल्का हो सकता है कि आप पवन से भी तेज गति से उड़ सकते हैं । लघिमा सिद्धि के द्वारा आपके शरीर का वजन लगभग ना के बराबर हो जाएगा ।

5 - प्राप्ति

प्राप्ति का तात्पर्य है जिस वस्तु की इच्छा हो उसको प्राप्त कर लेने की क्षमता या उसको स्वयं निर्मित कर लेने की क्षमता ।

6 - इशित्व

इशिता का तात्पर्य होता है ईश्वरत्त्व या भगवान की अवस्था को प्राप्त हो जाना । इस अवस्था को प्राप्त हो जाने के बाद आप देवताओं के समान हो जाएंगे और सभी प्रकार के कार्यों को करने में सक्षम हो जाएंगे ।

7- वशित्व

इसे एक प्रकार से आप वशीकरण सिद्धि जैसा मान सकते हैं । जिसे प्राप्त करने के बाद आप दूसरों को अपना दास बनाकर रख सकते हैं। आप जिसे चाहे

वशीभूत कर सकते हैं। वह आपकी बात को मानने के लिए विवश होगा । चाहते ना चाहते हुए उसे हर वह काम करना पड़ेगा जो आप उसे करवाना चाहेंगे । एक तरह से वह व्यक्ति आपका रोबोट बन जाएगा ।

8 - पराक्रम्य

बाबा बोले - पराक्रम्य सिद्धि के माध्यम से ही मैं तुमसे अपनी बात कह पा रहा हूं और तुम्हारी बात को समझ पा रहा हूं । किसी दूसरे व्यक्ति की मन की बात को समझना बहुत मुश्किल है, लेकिन पराक्रम्य सिद्धि प्राप्त करने के बाद आप किसी भी व्यक्ति के मन की इच्छाओं को भांप सकते हैं । आप यह आसानी से पता लगा सकते हैं कि सामने वाला व्यक्ति असल में चाहता क्या है । इसके अलावा आप अपने मन की बात उसके मस्तिष्क में संप्रेषित कर सकते हैं । बिना वार्तालाप किए अपनी पूरी की पूरी बात उसके मस्तिष्क में इस प्रकार से भेज सकते हैं कि वह उसको समझ जाए ।

मैं पराक्रम्य सिद्धि का प्रयोग करके ही तुमसे अभी बात कर रहा हूं । इसलिए तुम मेरी बात भी समझ रहे हो और

मैं तुम्हारी बात भी समझ पा रहा हूं। यह हमारे बुध ग्रह में सभी लोगों के पास होती है।

मैंने कहा - यह हमारी वैज्ञानिक कथा में कही जाने वाली टेलीपैथी जैसा है।
उन्होंने सहमति में सिर हिलाया - तुम ऐसा भी कह सकते हो ...
मैंने पूछा - क्या आपके बुध ग्रह में भी हमारे यहां के जैसे देवी देवता होते हैं या उन्हें माना जाता है।

वे बोले - मूल रूप से इसे हम शक्ति कह सकते हैं। जो ऊर्जा का एक रुपांतरण है। इसे अलग-अलग धर्मों और ग्रहों के हिसाब से अलग अलग तरीके से माना या स्वीकारा जाता है। पृथ्वी पर जिस शक्ति को परा शक्ति मान कर महाकाली कहा जाता है उसे हमारे बुध ग्रह पर बुलाकी कहा जाता है। पृथ्वी पर जिस प्रकार से उसे काले रंग का माना जाता है। उसी प्रकार बुध में बुलाकी को भी काले रंग का ही माना जाता है।

वास्तव में काला रंग शून्य का प्रतीक है। जहां रंग है ही नहीं। सारे रंगों का प्रकाश जब अवशोषित हो

जाता है तो उसे काला रंग कहते हैं । यदि वैज्ञानिकों की बात करें तो वह भी एक ऐसे अस्तित्व की कल्पना करते हैं जिसे ब्लैक होल कहा जाता है । वह एक ऐसी जगह है , जिसमें ग्रह, उपग्रह, क्षुद्र गृह, धूमकेतु से लेकर गुजरने वाला प्रकाश तक सब कुछ विलीन होकर गायब हो जाता है । जो सब कुछ गायब कर सकता है । वह सब कुछ उत्पन्न भी कर सकता है । यही मूल रूप से उस पराशक्ति का वास्तविक चिंतन है या उसका स्वभाव है ।

मैंने फिर प्रश्न किया - तब तो फिर वहां पर भी तंत्र साधनाएं होती होंगी ?

उन्होंने जवाब दिया - शरीर के अंदर स्थित शक्तियों को विकसित करने का विज्ञान ही तंत्र है । इसकी आवश्यकता हर ग्रह के प्राणियों को होती है । तरीके अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन साधनाएं और तंत्र अनंत काल से इस ब्रह्मांड में उपस्थित रहा है , और उपस्थित रहेगा ।
इतना कहकर वे शांत हो गए और मेरी ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखा ....

मेरी शंका का समाधान हो चुका था । उन्होंने कहा - और कोई प्रश्न है या मैं अपनी बात कहना प्रारंभ करू ?

मेरे प्रश्न समाप्त हो चुके थे ।
इसलिए मैंने कहा - नहीं बाबा । अब आप अपनी बात कहें कि आपने मुझे यहां क्यों बुलाया है ।
बौने बाबा ने कहा - अघोरानंद .... तुमने देखा ही होगा कि यह हम बौने लोगों की दुनिया है । यहां हम लोग पिछले 300 वर्षों से निवास कर रहे हैं मेरी आयु लगभग 300 वर्ष की है । हमारी बोनी जाति में सामान्य आयु 300 से 350 वर्ष की होती है ।

मेरी आंखें आश्चर्य से फटी हुई थी और मैं मन ही मन सोच रहा था कि इतने पिद्दे पिद्दे लोग तीन तीन सौ साल के हैं । हमारे यहां के 5 और 6 फुट के हट्टे कट्टे लोग मुश्किल से 70 या 80 की उम्र पार कर पाते हैं ।

मस्तिष्क में बाबा की हंसी गूजी - तुम लोग पृथ्वी के वासी हो और तुम्हारी पूर्ण आयु 100 साल है । हम लोग दूसरे ग्रह के वासी हैं इसलिए हमारी आयु ज्यादा है ।

यह मेरे लिए एक और आश्चर्यजनक बात थी । यानी मैं एलियन लोगों के साथ खड़ा हुआ था ।
यह सुनने के साथ मेरी उत्सुकता और बढ़ गई ।

बाबा ने आगे बताना प्रारंभ किया - आज से लगभग 300 वर्ष पहले बुध ग्रह से हमारे पूर्वज पृथ्वी ग्रह पर आए थे । वह कुल 10 लोग थे । जिसमें 2 पुरुष थे और 8 स्त्रियां ।

मैंने पूछा - आप अपना घर छोड़कर यहां क्यों आए ?

उन्होंने बताया - बुध ग्रह पर जीवन बेहद मुश्किल होता है । वहां पर ज्वालामुखी के विस्फोट निरंतर होते रहते हैं । जिसकी वजह से हमारी पूरी सभ्यता को खतरा रहता है । अपनी सभ्यता और प्रजाति को बचाने के लिए विशेष कैप्सूल में बिठाकर हर 5 साल में 10 लोगों को बाहर भेज दिया जाता है । जो अंतरिक्ष के किसी न किसी ग्रह में उपयुक्त स्थिति देखकर वहां बस जाते हैं ।
जिस पराक्रम्य सिद्धि का मैंने वर्णन किया है उस सिद्धि का उपयोग करके बुध ग्रह के लोग अपने अन्य ग्रह में स्थित लोगों के साथ निरंतर संपर्क बनाए रखते हैं ।

आवश्यकता पड़ने पर उनकी सहायता लेते हैं या उनकी सहायता करते हैं ।

बुध ग्रह तक संपर्क करने के लिए यह जरूरी होता है कि कम से कम 9 लोगों का दल , एक साथ पराक्रम्य यंत्र के नौ बिन्दुओं पर बैठकर इस सिद्धि का प्रयोग करते हुए अपनी अपनी मानसिक शक्तियों को केंद्रित करें । इससे यह संकेत इतने प्रबल हो जाएं कि बुध ग्रह तक पहुंच पाए ।

आज से 300 वर्ष पहले जब 10 लोग यहां पर आए थे तो उनकी मानसिक ऊर्जा बेहद प्रबल थी । वे बुध ग्रह पर पैदा हुए थे । बुध ग्रह में पैदा होने वाले हर बालक को पराक्रम्य सिद्धि जन्म से ही प्राप्त होती है । उस काल में वह बड़ी आसानी से बुध ग्रह के साथ संपर्क कर पाते थे । यहां आने के बाद उनके बच्चे होने प्रारंभ हुए । दिक्कत यह आ रही थी कि उन बच्चों के अंदर जन्म से ही यह सिद्धि नहीं आ पा रही थी । संभवत: पृथ्वी का वातावरण अलग होने की वजह से ऐसा हो रहा होगा ।

इस बात का पता तब चला जब उन 10 लोगों ने अपने बच्चों को बुध ग्रह पर मानसिक संपर्क करने के लिए प्रेरित किया । लेकिन ..... कोई भी ऐसा नहीं कर पाया । जब वे 10 लोग पृथ्वी पर आए थे उस समय मैं अपनी माता के गर्भ में था । इसलिए उनमें से केवल मैं ही एक ऐसा था जो मानसिक संपर्क स्थापित कर पाता था । अर्थात मेरा मानसिक संपर्क पराक्रम्य यंत्र से सीधे बुध ग्रह से हो जाता था । इसके लिए मुझे उन 10 में से किन्ही 8 लोगों के साथ बैठना होता था और हम 9 लोग मिलकर बुध ग्रह से संपर्क स्थापित कर सकते थे ।

मैं आँखें फाड़कर उस अविश्वसनीय सी लगने वाली कथा को सुन रहा था ।

बाबा आगे बोले - उस समय जो लोग यहां पर आए थे उनकी आयु लगभग 200 वर्ष की थी । एक-एक करके वे लोग अपनी पूर्ण आयु प्राप्त करके मृत्यु को प्राप्त होते चले गए । वर्तमान समय में उनमें से कोई भी जीवित नहीं है । अभी केवल मैं ऐसा बचा हूं जो बुध ग्रह से संपर्क कर सकता है । मेरी आयु भी लगभग 300 वर्ष की हो चुकी है यूं समझ लो कि मेरा भी अंतिम

समय लगभग आ चुका है । मेरी समस्या यह है कि किसी भी प्रकार से मुझे इस विद्या को कम से कम 9 लोगों को सिखाना ही है, ताकि मेरे जाने के बाद भविष्य में जरूरत पड़ने पर बुध ग्रह के लोग मेरे लोगों से संपर्क कर सकें । यहां के लोग बुध ग्रह के लोगों से संपर्क कर सकें । मैंने कई बच्चों को सिखाने की कोशिश की । लेकिन उनमें से किसी के भी अंदर यह सिद्धि विकसित नहीं हो पा रही है ।
बाबा बोले - मैं चाहता हूं कि तुम इस कार्य में मेरी मदद करो ।

यह एक नई चीज थी । मेरी समझ में नहीं आया कि मैं उनकी मदद कैसे कर सकता हूं ।

इसलिए मैंने पूछा - मैं आपकी मदद कैसे कर सकता हूं ।

उन्होंने वापस प्रश्न किया - क्या तुम मेरी मदद करने के लिए तैयार हो ?

यह बड़ा अजीब सा प्रश्न था और साथ ही अनेक संभावनाओं को भी जन्म दे रहा था । मन में यह भी विचार उठ रहे थे कि न जाने यह क्या करवाना चाहता है । दिक्कत यह थी कि मेरे मन में उठ रहे सारे विचारों को , जो सही गलत सभी प्रकार के थे , वह अपनी सिद्धियों के माध्यम से महसूस और समझ सकता था । लेकिन...

जैसा कि सहज मानवीय प्रवृत्ति होती है, किसी भी परिस्थिति में उसके विषय में पॉजिटिव और नेगेटिव दोनों प्रकार के विचार मन में आते ही हैं और मैं भी अपवाद नहीं था । मेरे मन में भी यही उधर पुथल चल रही थी कि मुझे ना जाने क्या करना पड़ेगा ।

मेरी उलझन को बाबा भी समझ गया उसने कहा - तुम चिंता मत करो मैं तुम्हें किसी परेशानी में डालने वाला काम नहीं करवाऊंगा .....

यह सुनकर मेरे मन में थोड़ा सा संतोष हुआ ....

मैंने कहा - आप बताएं ! अगर मेरे से संभव होगा तो मैं अवश्य आपको इस कार्य में सहयोग दूंगा ।

उन्होंने इस विषय पर चर्चा प्रारंभ करते हुए बताया - मैं काफी दिनों से तुम्हारे विषय में जानकारी प्राप्त कर रहा था । मेरी विद्या के माध्यम से मैंने अपने आसपास के योग्य लोगों को जानने का प्रयास किया जो तंत्र विद्या के क्षेत्र में गंभीर रूप से संलग्न है । उसमें तुम्हारे अलावा तीन और लोगों को मैं पिछले 2 महीने से निरंतर निगरानी में रख रहा था ।

मैंने पूछा - आप यहां बैठकर मेरी निगरानी कैसे कर सकते हो ?

बाबा ने बताया - मेरे लिए यह एक सामान्य सी क्रिया है । पिछले ढाई सौ साल से मैं निरंतर एक साधक का जीवन व्यतीत कर रहा हूं । हमारे बुध ग्रह में यह परंपरा है कि एक व्यक्ति पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए समाज के लिए उनके गुरु के रूप में स्थापित होता है । वह अपने तपस्या और साधना के माध्यम से समाज को मार्गदर्शन भी करता है और उनके ऊपर आने वाली समस्याओं का हल भी निकालता है । यहां मेरा स्थान वही है ।

इसके लिए विभिन्न प्रकार की प्रक्रियाओं के द्वारा काम से संबंधित इंद्रियों को समाप्त कर दिया जाता है । फिर वह व्यक्ति इस प्रकार के संबंधों के योग्य नहीं रह जाता । इसके लिए पैंतीस साल की कड़ी और कठोर साधना से गुजरना पड़ता है । इसे तुम दिगंबर जैन मुनियों या नागा साधुओं के संयम साधना जैसा मान सकते हो । काम एक ऐसा भाव है जो बड़ी लंबी साधना से नियंत्रित होता है , क्योंकि सृष्टि रचना का वह मूल भाव है ...

हमारे ग्रह से जो लोग दूसरे ग्रहों पर भेजे जाते हैं उनमें से एक गर्भवती महिला को इसीलिए भेजा जाता है ताकि उसका शिशु वहां जाकर इस गुरु पद को संभाले । इसके लिए बुध ग्रह से ही उसके ऊपर विशेष प्रकार के प्रयोग और गर्भवती महिला के माध्यम से गर्भस्थ शिशु को चेतना देने की प्रक्रिया भी संपन्न की जाती है । इसे तुम महाभारत मे अर्जुन द्वारा अभिमन्यु को चक्रव्युह का ज्ञान देने वाली क्रिया जैसे मान सकते हो । जब यह क्रिया पूर्ण हो जाती है तभी उसे कैप्सूल में बैठाकर बाहर भेजा जाता है । इसलिए उसका गुरु पद संभालना और उस मर्यादा का पालन करना एक अनिवार्य

आवश्यकता होती है । मैं भी उसी परंपरा का पालन कर रहा हूं जिसकी वजह से मैं अपने जैसे संतान की उत्पत्ति करने में सक्षम नहीं हूँ ।

इस प्रकार के रहस्यों का उद्घाटन होना मेरे लिए एक नई बात थी । इस रहस्यमय संसार में और महामाया के माया से उत्पन्न इस सृष्टि में कुछ भी असंभव नहीं है । अपने पूरे तांत्रिक जीवन में मैंने असंभव और अद्भुत घटनाओं को देखा है । इसलिए आश्चर्य होने के बाद भी मैंने उस बात को सहज ही स्वीकार किया । अब सवाल यह था कि इस समस्या का समाधान क्या है ?

मैंने उनसे प्रश्न किया - आपने अपनी बात तो बता दी । अब आप कृपया मुझे यह बताएं कि मुझसे आप इस संबंध में किस प्रकार की मदद या सहयोग चाहते हैं ? और उसके लिए मुझे क्या करना होगा ?

उन्होंने मुझसे कहा - इस कार्य के लिए तुमको 15 दिन यहीं पर रुकना होगा ।

मैंने कहा - मैं एक जरूरी कार्य से कोंडागांव जा रहा था । वहां मेरे मित्र मेरा किसी कार्य के लिए इंतजार कर रहे हैं ।

दरअसल चटर्जी दादा का बेटा घर से गायब हो गया था । उसी की तलाश के लिए चटर्जी दादा ने मुझे अपने यहां बुलाया था और वहां जाकर मुझे इस संबंध में प्रयास करना था । इससे पहले मैंने इस प्रकार की प्रक्रिया कभी संपन्न नहीं की थी । लेकिन चटर्जी दादा को ऐसा लगता था कि मेरे प्रयास करने से कुछ हो सकता है । अंत में उन्होंने इतना कह दिया कि तुम एक बार यहां आ जाओ उससे ही मुझे थोड़ी राहत मिल जाएगी ।

विश्वास संभवत: इस ब्रह्मांड की सबसे बड़ी ताकत है । उनको मुझ पर जरूरत से ज्यादा विश्वास था । शायद इसलिए वे बार-बार मुझसे आग्रह करते रहे और मैं उनको मना नहीं कर पाया । कई बार ऐसी परिस्थितियां आ जाती है जब आपको यह मालूम होता है कि वह कार्य आपके बस का नहीं है लेकिन फिर भी

प्रयास तो करना ही पड़ता है यही सोचकर मैं भी उनसे मिलने के लिए निकल पड़ा था ...

बौने बाबा ने पूछा - तुम जिस कार्य के लिए जा रहे हो अगर वह कार्य हो जाए तो फिर तो तुम्हें कोई दिक्कत नहीं होगी ?

उनका यह कहना मेरे लिए बिन मांगे मुराद पूरी हो जाने जैसे वाला मामला था । मैं यह अच्छे से जानता था कि गुम हुए व्यक्ति को ढूंढ कर लाने की विद्या मेरे पास नहीं है । उनके इतना कहते ही मैंने सहमति में सिर हिलाते हुए कहा - नहीं ! चटर्जी दादा का बेटा अगर उनको मिल जाए तो मुझे और कोई काम नहीं है ।

उन्होंने मेरी तरफ तीक्ष्ण दृष्टि से देखा और कहा - ठीक है मैं कोशिश करके देखता हूं ।
इसके बाद वह आंख बंद करके ध्यानस्थ हो गए।
लगभग 10 मिनट तक ध्यानस्थ रहे । उसके बाद उनका शरीर धीरे-धीरे वहां से विलुप्त होने लगा । लगभग 5 सेकंड में वे वहां से गायब हो गए ।

अपने स्थान से गायब हो जाना कोई सामान्य घटना नहीं होती । इसके लिए व्यापक साधना और सिद्धि की जरूरत पड़ती है । इस घटना ने यह तो साबित कर दिया था कि बौना बाबा सिद्ध पुरुष है । मैं वहीं पर इंतजार करता हुआ बैठा रहा....

लगभग आधे घंटे के बाद उसी आसन पर उनका शरीर वापस आया । उनके चेहरे पर हल्की सी मुस्कान दिख रही थी ।

उन्होंने कहा - लड़के को घर पहुंचा दिया है ।

यह मेरे लिए थोड़ा अविश्वसनीय था । उनके अदृश्य होने से मुझे यह विश्वास तो हो गया था कि वह सिद्ध पुरुष हैं । लेकिन चटर्जी दादा का लड़का इस आधे घंटे मे उनके घर पहुंच गया होगा इस बात पर मुझे अभी भी संशय था ।

बोना बाबा मेरे संशय को भाँप के बोले - देखना चाहता है ?

मैंने सहमति में सिर हिलाया ।

तंत्र विषयक किताबों में मैंने पढ़ा था कि तंत्र मे एक विद्या होती है जिसे हाजरात भी कहते हैं। इसमें पान के पत्ते नाखून आदि में किसी स्थान के दृश्य दिखाए जा सकते हैं। इसके लिए किसी छोटे आयु के बालक या बालिका को माध्यम बनाया जाता है। इसका कारण संभवतः यह होता है कि ऐसे बच्चे बेहद सहज सरल होते हैं और उनका ब्रह्मांड संपर्क बेहद आसानी से हो जाता है। तांत्रिक अपने मंत्रों के माध्यम से इस संपर्क को उस माध्यम के द्वारा स्थापित कर लेता है और उसके बाद वह उस पत्ते के माध्यम से उस दृश्य को देख पाने में सक्षम होता है। मुझे लगा कि शायद बौने बाबा मुझे वैसा कुछ दिखाएंगे।

लेकिन .....

वह तो और ऊंची चीज थे ..... मेरी कल्पना से और मेरी सोच से भी बहुत ऊंची.....

वह मुझे लेकर पहाड़ के बीच में बने हुए खोह मे ले गए। वह लगभग 20 फुट ऊंची थी और न जाने कहां तक फैली हुई थी। हम लोग लगभग 30 फीट अंदर गए होंगे

। तब तक रोशनी आनी बंद हो गई थी और अंधेरा हो गया था ।

वह एक कमरे जैसा था । वहां पहुंचने के बाद बाबा ने कुछ किया और एक दीवार किसी एलईडी स्क्रीन की तरह रोशन हो गई । उसमें दृश्य उभरने लगे । वह चटर्जी दादा के घर का दृश्य था । चटर्जी दादा की पत्नी अपने बेटे से लिपट कर रो रही थी और बार-बार पूछ रही थी - कोथाय गेछिस, छेले (कहां चला गया था, बेटा) । मां बेटे का यह मिलन देखकर चटर्जी दादा भी अपने आंसू पोछ रहे थे । यह बेहद अद्भुत था । ऐसा लग रहा था जैसे चटर्जी दादा के घर से लाइव टेलीकास्ट हो रहा हो ।

उस अद्भुत दृश्य को देखकर मैं अवाक रह गया । साधनात्मक शक्ति से ऐसा किया जा सकता है यह न तो मैंने किसी ग्रंथ में पढ़ा था और ना ही किसी साधक के द्वारा इस प्रकार का वर्णन सुना था ।

वास्तव में तंत्र साधनाओं का क्षेत्र..... उसकी साधनाओं की शक्तियां ..... और उनके द्वारा किए जा सकने वाले कार्यों की सीमा अनंत है....

तो अब बारी थी बाबा के कार्य को करने की ..... जैसा कि आप लोग जानते हैं मैं एक सरकारी कार्यालय में बाबू का कार्य करता था । साधक था तो बीच-बीच में किसी कार्य से दो दिन चार दिन या हफ्ते दस दिन के लिए गायब हो जाना एक सामान्य सी बात थी । जिसे मेरे कार्यालय के लोगों ने भी स्वीकार कर लिया था । कभी-कभी इसके लिए डांट भी पड़ जाती थी । लेकिन मेरा अधिकारी भी जानता था कि मैं सुधरने वाला नहीं हूं ।

हां जब कार्यालय में होता था तो अपना कार्य पूरी श्रद्धा और ईमानदारी के साथ करता था । कई बार तो अपने आजू-बाजू वालों का काम भी कर देता था । इसलिए मेरे ना होने पर वह भी सहर्ष मेरा काम कर देते थे । इस प्रकार आपसी सद्भावना में नौकरी भी चल जा रही थी ....

जीवन में यह एक सत्य है कि नौकरी हो या वैवाहिक जीवन ! अगर आपका अपने सहयोगियों के साथ सद्भावना युक्त संबंध नहीं है तो आपके लिए दोनों जगह दिक्कत पैदा हो सकती है । अगर विवाहित हैं तो पत्नी

के साथ में आपके संबंध दोस्ताना होने चाहिए । कभी आप उसका काम कर दें कभी वह आपका काम कर दे । तो गृहस्थी की गाड़ी बड़ी आसानी से चल जाती है । ठीक यही कार्यालयीन विषयों में भी है । अगर आप अपने साथ में काम करने वालों के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं और उनके काम में सहयोग करते हैं तो इस बात की 90% संभावना है कि आपको भी उसी प्रकार का सहयोग मिलता रहेगा ....
खैर ...

मैंने बाबा से पूछा - बताइए मुझे क्या करना होगा ?

बाबा ने कहा - अघोरानंद ! तुम किसी प्रतिबंध से बंधे हुए नहीं हो । इसलिए मैं यह प्रस्ताव तुम्हारे सामने रख रहा हूं । तुम इसे मानने या न मानने के लिए स्वतंत्र हो ।

यह सुनकर मुझे थोड़ा अच्छा लगा क्योंकि मेरा कार्य तो उन्होंने कर दिया था और अगर वह शर्त भी रख देते तो मुझे उनका कार्य करना ही था । लेकिन जब आपके पास इस प्रकार का प्रस्ताव आए जिसमें आपके आत्मसम्मान को भी ध्यान मे रखा गया हो ! तो ! आप

सहजता से उस प्रस्ताव को स्वीकार कर लेने में संकोच नहीं करते हैं ! और ! मेरे साथ भी वही होने वाला था ।

मैंने कहा - आप बताएं अगर मुझसे हो सकेगा तो मैं अवश्य करूंगा ।

बोने बाबा ने बोलना चालू किया - मेरा नाम कीबुलाकी है । इसका हमारी भाषा में मतलब होता है बुलाकी का पुत्र । अगर तुम्हारी भाषा में समझाऊं तो इसका मतलब होगा काली का पुत्र । जैसा मैंने तुम को बताया था कि हमारे ग्रह में बच्चे जब जन्म लेते हैं तो उनके अंदर स्वयं ही पराक्रम्य सिद्धि विद्यमान होती है । इसके अलावा अष्ट सिद्धियां मेरे जैसा हर गुरु धीरे-धीरे साधना करके प्राप्त कर लेते हैं और लगभग 200 वर्ष की आयु प्राप्त करने वाला हर गुरु या कीबुलाकी इन अष्ट सिद्धियों में सिद्धहस्त होता है । मुझ में भी यह सारी सिद्धियां मौजूद है ।

मेरी समस्या यह है कि यहां जन्म लेने वाली हमारी अगली पीढ़ी में से किसी के भी पास पराक्रम्य या टेलीपेथि सिद्धि नहीं है । जिसके कारण उनका अपने

मूल ग्रह से संपर्क हो पाना मेरे बाद संभव नहीं होगा । गुरु होने के नाते मुझे इसका उपाय ढूंढना जरूरी है ।

मैंने अपनी साधना के माध्यम से इस समस्या का समाधान निकालने के लिए काफी चिंतन किया । उसके बाद मुझे एक समाधान प्राप्त हुआ है ।

मैंने पूछा - क्या समाधान प्राप्त हुआ है ?

कीबुलाकी बोले - बुध ग्रह के वंशज जो पृथ्वी पर पैदा हुए हैं । वह यहां के वातावरण की वजह से इस सिद्धि को प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं । उसके लिए एकमात्र उपाय यह है कि बुध ग्रह के प्राणी और पृथ्वी ग्रह के प्राणी को मिलाकर एक नई पीढ़ी पैदा की जाए । जो इस सिद्धि को प्राप्त कर सकेगी । इसके लिए मुझे तुम्हारे सहयोग की जरूरत है । मैं चाहता हूं कि हमारे बस्ती के कुछ स्त्रियों के साथ संबंध स्थापित करके उन्हें गर्भवती करो । ताकि उनके गर्भ से पृथ्वीवासी और बुधवासी के संयुक्त संतान की उत्पत्ति हो और वह इस विद्या को सीख सकें ।

बात बड़ी अजीब थी और इतना ही अजीब प्रस्ताव भी था। लेकिन इसके अलावा कोई उपाय भी नहीं था। मैं इस सोच में पड़ गया कि यह कैसे संभव है। मैं स्वयं लगभग 5 फीट ऊंचा था। तब भी बुध ग्रह के उन बौनों की तुलना में लगभग तीन या चार गुना ऊंचाई मेरी ज्यादा थी। ऐसी स्थिति में यह कैसे संभव होगा यह सोच सोच कर मैं विचलित होने लगा।

कीबुलाकी मेरी भावना को समझ रहे थे। उन्होंने कहा कि तुम्हें इस बारे में चिंतित होने की जरूरत नहीं है। अपनी सिद्धियों से 15 दिनों के लिए मैं तुम्हें भी इन्हीं के आकार का बना दूंगा। हमारे यहां की स्त्रियों का गर्भकाल केवल 10 दिनों का होता है और दसवें दिन संतान की उत्पत्ति हो जाती है। अगले दिन से ही वह चलना फिरना चालू कर देता है। पृथ्वी के बच्चों की तरह उसे 9 महीने नहीं लगते हैं और ना ही चलने के लिए साल भर इंतजार करना होता है।

यह सुनकर मुझे भी थोड़ा सा खेद हुआ। कभी-कभी मैं भी इस बारे में सोचा करता था कि पृथ्वी के सारे जानवरों के बच्चे पैदा होते ही चलने फिरने लग जाते हैं

। लेकिन मनुष्य का बच्चा बोलने के लिए 6 महीने का समय लेता है । कभी-कभी उससे भी ज्यादा ! और ! चलने के लिए तो लगभग साल भर का समय ले ही लेता है । तब तक बेचारा निस्सहाय अपने मां के भरोसे पड़ा रहता है । वहीं दूसरी ओर एक गाय का बछड़ा पैदा होने के छह आठ घंटे में कुलाची भरता हुआ इधर-उधर दौड़ने लगता है । कुत्ते के बच्चे की आंखें बंद रहती है तब भी ! वह आराम से चल फिर लेता है । लगभग हर जानवर का बच्चा तुरंत या फिर महीने भर के अंदर चलने फिरने और स्वयं से खाने पीने लायक हो जाता है । केवल मानव की संतान ही इसके लिए साल भर का समय लेती है ।

कभी कभी मुझे ऐसा लगता है कि संभवतः मानव पृथ्वी का वासी नहीं है । वह कहीं बाहर से आया हुआ एलियन है । अन्यथा वह भी अन्य पृथ्वी के जीवो की तरह आसानी से चलने फिरने और स्वयं खाने पीने के योग्य हो जाता ।

आप भी इस विषय पर जरूर सोचिएगा....

इस तरह से यह तय हुआ कि कीबुलाकी मुझे उन बौनों के आकार का बना देगा । मुझे उसी अवस्था में 15 दिनों तक उनके साथ रहना पड़ेगा । इस दौरान मुझे संतानोत्पत्ति के लिए प्रयास करने पड़ेंगे ।

मेरे सहमति देने के बाद कीबुलाकी मुझे लेकर उसी खोह के अंदर चले गए । लगभग 100 मीटर अंदर जाने के बाद थोड़ी-थोड़ी रोशनी दिखाई देने लगी । वहां एक झरना बह रहा था । झरने का पानी बिल्कुल नीले रंग का था जो एक बड़े से तालाब में इकट्ठा हो जाता था । उस तालाब के अंदर से भाप सी उठ रही थी । तालाब के अंदर का पानी हल्के लाल रंग का था । लगभग रूह अफ्जा के शरबत जैसा रंग का.....

बौने बाबा किबुलाकी ने मुझे वस्त्र उतारने के लिए कहा । उन्होंने वस्त्रों की तरफ कुछ इशारा किया और अचानक वह वस्त्र वहां से गायब हो गए । उसके बाद वह मुझे लेकर उस तालाब के अंदर चले गए । तलाब लगभग एक या सवा फिट गहरा रहा होगा । उसका पानी लगभग उनकी गर्दन तक आ रहा था और मुश्किल से मेरे घुटनों तक.....

वहां पहुंचने के बाद बाबा ने मुझे आंख बंद कर खड़े रहने के लिए कहा । मैं आँख बंद करके खड़ा हो गया । हम दोनों एक दूसरे के आमने-सामने खड़े थे ।

उन्होंने फिर एक अजीब सी भाषा में कुछ कुछ बोलना चालू किया । संभवतः वह उनकी भाषा में मंत्रोच्चार रहा होगा । फिर उसने मुझे छू लिया और मंत्र उच्चारण जोर जोर से करने लगा । उस मंत्र के उच्चारण के साथ साथ मेरे मानस में एक बिम्ब धीरे-धीरे स्पष्ट होता हुआ महसूस हुआ । जो भगवती महाकाली जैसा था । उनके तेजस्वी मुख मंडल पर स्मित मुस्कान तैर रही थी । वह भी मुश्किल से 5 सेकंड तक रहा होगा । उसके बाद बिम्ब लुप्त हो गया ।

थोड़ी देर में पानी में हलचल जैसा आभास हुआ । ऐसा लग रहा था जैसे पानी बड़ी जोर से हिल रहा हो । थोड़ी देर के बाद बाबा ने आंख खोलने के लिए कहा। मैंने देखा सामने एक अजीब सा गोल आकृति वाला यान ! जो संभवतः उनका कैप्सूल रहा होगा ! वह पानी के ऊपर हमारे सामने तैर रहा था । उसका दरवाजा खुला

हुआ था। बाबा ने मुझे वही खड़े रहने का इशारा किया और यान के अंदर चला गया।

अंदर जाने के बाद वह यान के यंत्रों से छेड़छाड़ करने लगा। थोड़ी देर में उस यान के अंदर से एक नारंगी रंग की किरण मेरी तरफ लपकी और मेरे सोचने से पहले ही मेरे चारों तरफ एक आभामंडल की तरह बिखर गई। मुझे तेज बिजली का झटका लगा। फिर मुझे बेहोश होने जैसा एहसास हुआ।

जब मुझे होश आया तो मैं एक झोपड़ी के अंदर जमीन पर लेटा हुआ था। दो बौनी महिलाएं वहां बैठी हुई थी। एक कोई द्रव मेरे शरीर पर मल रही थी। दूसरी महिला खरल जैसे बर्तन में कोई चीज पीस रही थी। जो किसी जड़ी बूटी के जैसा लग रहा था।

आधे घंटे तक वह मेरे शरीर पर उस द्रव को लगाती रही। खरल वाली महिला बर्तन में जड़ी बूटी पिसती रही। आधे घंटे के बाद एक महिला बाहर चली गई। खरल में जड़ी-बूटी पीसने वाली महिला ने उसमें से पिसी हुई सामग्री निकालकर लगभग कंचे के आकार का एक

गोला बनाया और उसे मेरे मुंह में डाल दिया । उसके बाद वह भी झोपड़ी से बाहर चली गई ।

मैं वहीं जमीन पर ही लेटा रहा । मुझे बेहद थकावट सी महसूस हो रही थी । ऐसा लग रहा था जैसे मेरे शरीर का पूरा द्रव बाहर निकल गया हो । ठीक वैसी ही फीलिंग थी जैसे लू लगने पर आती है । शरीर का हर अंग अंदर की ओर खींच रहा हो ऐसे महसूस हो रहा था । उस दवाई के गोले को खाने के बाद मैं फिर बेहोश हो गया ।

अगली बार जब मुझे होश आया तो मैंने देखा कीबुलाकी मेरी बगल में बैठा हुआ है । वह कुछ मंत्र जाप कर रहा है । उसे देखने के बाद मैंने अपने शरीर को देखा ....

मैं आश्चर्यचकित रह गया .....

मैं भी बोना हो चुका था .....

लगभग 2 फुट का मेरा आकार हो गया था । ठीक उन बौनों के जैसे ! लगभग बाबा के आकार का ....

मंत्र पढ़ते पढ़ते कीबुलाकी ने अपने दाहिने हाथ का अंगूठा मेरे मस्तक के बीच में लगा दिया ! जहां पर तीसरे नेत्र की स्थिति मानी जाती है !

मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे माथे पर जलता हुआ अंगारा रख दिया गया हो । मेरा पूरा शरीर अस्तित्व हीन जैसा लगने लगा । मुझे एक बहुत बड़े प्रकाशीय गोले का दर्शन होने लगा । जिसके सामने मैं हाथ जोड़कर खड़ा था । वह प्रकाशीय गोला अत्यंत विशालकाय आकार का था । जिसका कोई ओर छोर दिखाई नहीं दे रहा था ।

मुश्किल से 2 या 3 सेकंड उन्होंने अपने अंगूठे को मेरे माथे पर रखा होगा । उसके बाद अपने अंगूठे को उन्होंने हटा लिया ।

उनके अंगूठा हटाते हैं वह प्रकाशीय गोला लुप्त हो गया । मैं वापस अपने अस्तित्व में लौट आया । मैं उसी झोपड़ी में लेटा हुआ था ।

तभी ! एक बौनी महिला लगभग आधा इंच लंबी और आधा सूत मोटी एक अलपिन जैसी चीज लेकर आई । उसके हाथ में हथौड़ी भी थी । कीबुलाकी ने वह हथौड़ी और आलपिन अपने हाथ में उठा ली । मेरे कुछ सोचने समझने से पहले ही, उसने उस आलपिन को ठीक मेरे खोपड़ी के ऊपरी भाग में जिसे ब्रह्मरंध्र कहा जाता है, वहां ठोक दिया । एक ही बार में शायद पूरा आलपिन अंदर घुस गया । वह महिला दूसरे हाथ में काले रंग का एक पत्ता पकड़ी हुई थी । उस पत्ते को निचोड़ कर उन्होंने मेरे सर पर मल दिया । थोड़े से दर्द और बहुत सारे डर के साथ मैं फिर से बेहोश हो गया । आज भी मेरे सर का वह हिस्सा थोड़ा फूला हुआ है । समय के साथ साथ घांव का ऊपरी हिस्सा चमड़े की परत के नीचे दब गया है । लेकिन ! हाथ से छूने पर फूले होने का एहसास जरूर होता है । खैर.....

अबकी बार जब होश आया ..... तो बाहर अंधेरा छाया हुआ था । कमरे में एक छोटा सा दीपक जल रहा था । कीबुलाकी मेरे सिरहाने पर अब भी बैठे हुए थे । उनकी मानसिक स्थिति शायद वैसी ही होगी जैसे किसी

वैज्ञानिक के अपने नवीनतम प्रयोग की सफलता या असफलता की प्रतीक्षा करते समय होती होगी । मेरे होश में आते ही कीबुलाकी के चेहरे पर मुस्कान तैर गई ।

उन्होंने मेरे सिर पर हल्के से हाथ फेरा । मैं उठकर बैठ गया । उनके चरण स्पर्श कर लिए । मैं समझ गया था कि उन्होंने संभवत: अपने ग्रह के हिसाब से मुझे दीक्षा प्रदान की थी । विधिवत अपना शिष्य बनाया था । उस दृष्टि से वह अब मेरे गुरु हो चुके थे । मेरे लिए वंदनीय थे ।

उन्होंने करुणामई दृष्टि से मेरी ओर देखा ! मेरे सिर पर हाथ फेरा और कहा - बेटा अघोरानंद ! मैंने तुम्हारे अंदर पराक्रम्य सिद्धि को स्थापित कर दिया है । इसके साथ साथ मैंने तुम्हारे ब्रह्मरंध्र में स्थित सहस्त्रार चक्र में भी सोने की कील के माध्यम से जागरण क्रिया संपन्न की है । जिसकी वजह से अब तुम्हारा सहस्त्रार चक्र भी चैतन्य हो गया है ।

मेरे अंदर की जिज्ञासा नहीं गई थी । मैंने पूछा - आपने मेरे सर पर कील क्यों ठोकी ?

बाबा मुस्कुराए और बोले - बेटा सहस्त्रार चक्र का जागरण बहुत लंबी प्रक्रिया है। इसमें कम से कम 10 साल का समय लगता ही है लेकिन हमारे पास अभी इतना समय नहीं है।

तुमको मैं कुंडलिनी के बारे में कुछ बातें बताता हूं।

वास्तव में हमारे शरीर में 72000 नाड़ियां होती है। इनमें से प्रमुख तीन नाड़ियां होती हैं। जिन्हें इडा पिंगला और सुषुम्ना कहा जाता है। यह नाड़ियां हमारे मूलाधार चक्र से प्रारंभ होती है और रीड की हड्डी के साथ-साथ मस्तिष्क की ओर बढ़ती है।

इनके मिलन बिंदुओं को ही हमने चक्र कहा है। जहां पर यह तीनों नाड़ियां मिलती है वहां पर एक चक्र बनता है।

उदाहरण के लिए सबसे नीचे वाले भाग में जहां पर तीनों नाड़ियां मिलती है वहां मूलाधार चक्र है। उसके बाद अगले मिलन स्थल पर स्वाधिष्ठान चक्र है। आगे बढ़ने पर तीसरे मिलन स्थल पर मणिपुर चक्र है।

और चौथे पर अनाहत चक्र स्थित है । इसी प्रकार इन नाडियों के मिलन स्थल पर विशुद्ध चक्र और आज्ञा चक्र भी स्थापित है ।

सहस्त्रार चक्र में जाकर यह तीनों नाडिया पूर्ण रूप से एक दूसरे में समाहित हो जाती हैं । सहस्त्रार चक्र को सहस्त्रदल अर्थात हजार पंखुड़ियों वाले कमल के समान माना गया है । जो अधोमुखी है अर्थात उल्टा है । उसके पंखुड़ियों में से अमृत वर्षा होती रहती है । इसलिए सहस्त्रार चक्र जाग्रत योगी उस अमृत की वर्षा की वजह से अनंत काल तक जीवित रह सकता है । इसका कारण यह है कि वह सहस्त्रार चक्र से झड़ते हुए अमृत का पान करता रहता है ।

इन तीनों बिंदुओं के मिलन स्थल पर एक विशेष मंत्र के माध्यम से हम बुध ग्रह वासी सोने के मिश्रण से बनी विशेष धातु से बनी हुई कील अपने शिष्य के सिर पर ठोक देते हैं । जिसके बाद सहस्त्रार चक्र अपने आप जागृत हो जाता है । इस धातु को विभिन्न प्रकार की धातुओं के मिश्रण से तांत्रिक प्रक्रियाओं द्वारा तैयार किया जाता है । इस धातु की कील को तैयार करने में

कीबुलाकी के कुंडली जागरण का तरीका बेहद अजीब और साथ ही अल्प समय में होने वाला था। जिसके बारे में जानकर मैं बेहद आश्चर्यचकित था। मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि कुंडलिनी जागरण की इस प्रकार की कोई प्रक्रिया भी हो सकती है। जिसमें फटाफट कुंडली जागरण हो जाता हो।

अगर स्पष्ट कहूं तो मुझे उनकी बात पर विश्वास नहीं हुआ। फिर मैंने सोचा कि अगर वास्तव में कुंडली जागरण हुआ है तो उसका एहसास भी आने वाले समय में हो जाएगा तब देखेंगे।

कीबुलाकी ने मुझसे कहा - अब तुमको इन शक्तियों का परीक्षण करना है। जो हम कल सुबह संपन्न करेंगे। तब तक यह शक्ति भी तुम्हारे शरीर में रच बस जाएगी। इस प्रक्रिया के कारण शरीर मे 4 कलाओं का जागरण हो जाता है। इसकी वजह से साधक के अंदर प्रबल आकर्षण पैदा हो जाता है। इसकी वजह से हो सकता है कई अशरीरी शक्तियाँ और यहाँ की स्त्रियाँ भी आज रात तुमसे संसर्ग के लिए प्रयास करेंगी। तुमको कल सुबह सूर्योदय तक इससे बचना है। विशेष रूप से

कीबुलाकी के कुंडली जागरण का तरीका बेहद अजीब और साथ ही अल्प समय में होने वाला था। जिसके बारे में जानकर मैं बेहद आश्चर्यचकित था। मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि कुंडलिनी जागरण की इस प्रकार की कोई प्रक्रिया भी हो सकती है। जिसमें फटाफट कुंडली जागरण हो जाता हो।

अगर स्पष्ट कहूं तो मुझे उनकी बात पर विश्वास नहीं हुआ। फिर मैंने सोचा कि अगर वास्तव में कुंडली जागरण हुआ है तो उसका एहसास भी आने वाले समय में हो जाएगा तब देखेंगे।

कीबुलाकी ने मुझसे कहा - अब तुमको इन शक्तियों का परीक्षण करना है। जो हम कल सुबह संपन्न करेंगे। तब तक यह शक्ति भी तुम्हारे शरीर में रच बस जाएगी। इस प्रक्रिया के कारण शरीर मे 4 कलाओं का जागरण हो जाता है। इसकी वजह से साधक के अंदर प्रबल आकर्षण पैदा हो जाता है। इसकी वजह से हो सकता है कई अशरीरी शक्तियाँ और यहाँ की स्त्रियाँ भी आज रात तुमसे संसर्ग के लिए प्रयास करेंगी। तुमको कल सुबह सूर्योदय तक इससे बचना है। विशेष रूप से

स्खलित होने से ... ऐसा हुआ तो तुम्हारी शक्ति क्षीण होती जाएगी । यदि तुम इससे बचे रहें और सुबह सूर्योदय के बाद एक घंटे तक सूर्य की रश्मियो का सेवन कर लोगे तो ये शक्तियाँ तुम्हारे अंदर रच बस जाएंगी ।

इतना बता कर झोपड़ी से बाहर चले गए और उसके बाद उस झोपड़ी में जो कुछ हुआ वह किसी भी प्रकार की कल्पना से परे था ....

आपके शरीर में अगर कोई कांटा घुसा हुआ हो तो आपको उसकी तकलीफ लगातार महसूस होती रहती है । आपका ध्यान हमेशा उसी कांटे की तरफ जाता है । अब आप कल्पना करें कि मेरे सर के ऊपर एक आलपिन घुसा हुआ है । मुझे यह भी पता है कि मैं उसे निकाल नहीं सकता । तब मेरी स्थिति कैसी रही होगी ?

काफी देर तक मैं बैठकर सोचता रहा कि आखिर यह सब क्या हो रहा है ?

सही है ? या गलत है ?

इस बंदे ने मेरे सर पर एक कील ठोक दी है ?

अब मेरा क्या होगा ?

कई प्रकार के विचार मेरे दिमाग में उमड़ घुमड़ कर आ रहे थे । उस समय की परिस्थितियां ही ऐसी थी कि वैसे विचारों का आना बेहद स्वाभाविक भी था । मैं उसी प्रकार कशमकश में बैठा हुआ था ।

तभी ! अचानक !! मुझे अपने सिर में तेज दर्द का आभास हुआ । वह पीड़ा बिल्कुल ऐसी थी जैसे सर को चारों तरफ से किसी संडासी से पकड़कर दबा दिया गया हो ।

असहनीय पीड़ा .....

इतनी पीड़ा कि मेरी आंखों से आंसू निकल पड़े और मैं दर्द के मारे चीख पड़ा । उस दर्द के तेज एहसास के साथ मेरी आंखें मूंद गई । मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा ध्यान लग गया हो ।

शून्य .....

निर्विकार .....

शांत .....

सब कुछ शांत ..... महसूस हो रहा था । गहन शांति का आभास हो रहा था ।

बिल्कुल वैसा जैसे किसी एकांत पहाड़ की सबसे ऊंची चोटी पर अकेला बैठा हुआ हूं ....

किसी गुफा के अंधकार में शांत बैठा हुआ ...

आस पास न तो किसी प्रकार की आवाज हो रही है न हीं किसी प्रकार का कोई जीव जंतु का वास है ....

यह भी आभास नहीं हो रहा था कि मैं कहां पर हूं ?

उस स्थिति को मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता ...

कुछ ऐसी स्थिति थी ...

लगभग घंटे भर तक मैं उसी स्थिति में रहा होऊंगा ...

फिर एक कोमल हाथ के स्पर्श ने मुझे उस अवस्था से बाहर निकलने को मजबूर किया....

मैंने देखा कि बेहद झीने वस्त्र पहने हुए एक युवती अपने कोमल हाथों से मेरे सर को सहला रही थी ।

उसके चेहरे पर हल्की मुस्कुराहट थी और आंखों में आमंत्रण का भाव .... तभी मुझे अपने पांव पर भी किसी के हाथ का एहसास हुआ । नीचे देखा तो वहां भी एक सुंदर युवती बैठी थी जो मेरे पांव दबा रही थी ।

उस समय मुझे एहसास हुआ कि जब देवराज इंद्र स्वर्ग लोक से अप्सराओं को ऋषि यों का ध्यान भंग करने के लिए भेजते रहे होंगे तब उन पर क्या गुजरती रही होगी ।

कीबुलाकी ने पहले ही सचेत कर दिया था कि आज की रात किसी भी स्थिति में स्खलित नहीं होना है.... जो लक्षण दिखाई दे रहे थे । वह बेहद खतरनाक थे ।

ऐसी स्थिति में बचने का एक जबरदस्त उपाय उस समय दिमाग में आया । मैं पद्मासन लगाकर बैठ गया । पद्मासन लगाने के बाद मैंने सोचा कि जब मेरा सहस्त्रार चक्र जागृत हो गया है तो ध्यान भी अवश्य लग जाएगा । ध्यान लग गया तो इन सब प्रक्रम से मैं बच जाऊंगा ।

मैंने अपने भ्रू मध्य पर ध्यान लगाने का प्रयास किया और थोड़ी देर में सफल भी हो गया । इस बीच वे दोनों युवतियां मेरे शरीर के साथ लगातार छेड़छाड़ करती रही । लगभग पांच सात मिनट प्रयास करने के बाद मेरा ध्यान लग गया । उसके बाद क्या हुआ यह मुझे पता नहीं चला । मैं पद्मासन की अवस्था में ही बैठा रहा.....

किबुलाकी की आवाज के साथ मेरा ध्यान टूटा । मैंने देखा बाहर उजाला फैल रहा था । मैंने आँख खोल कर देखा । सामने कीबुलाकी खड़े हुए मुस्कुरा रहे थे । उन्होंने कहा - चलो ।

बहुत दिनों के बाद पद्मासन लगाया था । सामान्यतः इतने देर तक पद्मासन लगाने का अभ्यास भी नहीं था । पाव बुरी तरह दर्द करने लगे थे । इसलिए पैर सीधा होने में थोड़ा समय लगा ... फिर मैं उठकर उनके साथ चल पड़ा । वह मुझे लेकर उसी खोह की तरफ चले गए ।

खोह में लगभग 100 मीटर चलने के बाद हम फिर उस तालाब के पास पहुंचे । उन्होंने मुझे उसमें स्नान करने का निर्देश दिया । स्नान कर लेने के बाद उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और आंखें बंद कर लेने का निर्देश दिया । मेरे आंख बंद करते ही मुझे एक झटका सा लगा । जब किबुलाकी ने आंखें खोलने का निर्देश दिया तो मैंने देखा हम एक ऊंची पहाड़ी चोटी पर खड़े हुए हैं । दूर क्षितिज के पास सूर्य होले होले अपने पथ पर गतिमान होने के लिए अग्रसर था । ऊंची चोटी थी । सूर्य एकदम

स्पष्ट आंखों में दिखाई देता था । बीच में किसी प्रकार की बाधा आती नहीं थी ।

उन्होने मुझे सूर्य को देखते रहने के लिए कहा । सूर्य ब्रह्मांड में सबसे तेजस्वी देवता माना जाता है और वह हमेशा ज्वलनशील अवस्था में ही रहता है । इसलिए उसकी ओर लगातार देख पाना बहुत मुश्किल होता है । मैं भी कुछ देर तक उनकी ओर देखता रहा फिर मेरी आंखें अपने आप झपक गई ।

मेरी आंखों को झपकते हुए देखकर कीबुलाकी ने ज़ोर से कहा - आंख खुली रखो ।

मैंने फिर से कोशिश की । लेकिन ! इस बार भी कुछ समय के बाद मेरी आंखें झपक गई ।

कीबुलाकी ने अपने हाथ की उंगलियों को मेरी आंखों पर रखा और हल्के से रगड़ दिया । फिर कहा - अब देखो ....
और आश्चर्य .....

अबकी बार मेरी आंखें खुली रही .... मैं काफी देर तक सूर्य भगवान को त्राटक करके देखता रहा ....

लगभग आधे घंटे तक वह स्थिति रही होगी । उसके बाद कीबुलाकी ने मुझे फिर से पद्मासन लगाकर ध्यान करने के लिए कहा । मैं पद्मासन लगाकर बैठ गया । आंख बंद करते ही मुझे अपने भ्रूमध्य में भगवान सूर्य की उपस्थिति का आभास होने लगा .....
वैसे ही तेजस्वी छवि मेरे भौंह के बीच में मुझे दिखाई दे रही थी .....
अनंत प्रकाश की आभा से युक्त !
ऐसा लग रहा था .....
जैसे मैं प्रकाश के अंदर नहा रहा हूं .....

थोड़ी देर के बाद वह दृश्य विलुप्त हो गया । मैंने देखा कीबुलाकी ने मेरे रीढ़ की हड्डी की तरफ अपने अंगूठे से अलग-अलग हिस्सों पर दवाब देना प्रारंभ किया । संभवत: वे मेरी रीढ़ की हड्डी पर किसी प्रकार का प्रयोग कर रहे थे । इस क्रिया में उन्हें 10:15 मिनट का समय लगा होगा । ऐसा लग रहा था जैसे वे रीढ़ की हड्डी की हर एक गोली को पकड़ कर कुछ कर रहे हो .।

मैं उसी प्रकार पद्मासन में बैठा था । जब वे हड्डी को पकड़ कर अपनी क्रिया करते थे तो एक तेज दर्द की लहर उठती थी । इस प्रकार से उन्होंने रीढ़ की हड्डी की हर गोली पर इस प्रक्रिया को संपन्न किया । उतनी ही बार मैं उस तेज दर्द के अहसास से होकर गुजरा । यह सब करते-करते लगभग 1 घंटे का समय बीत चुका था । फिर उन्होंने मुझे उठकर खड़े हो जाने के लिए कहा ।

अब हम दोनों हाथ जोड़कर सूर्य भगवान के सामने खड़े हुए थे । उनकी किरणे हमारे चारों तरफ बिखरी हुई थी । मैंने पहले ध्यान नहीं दिया था लेकिन अभी जब मैंने देखा तो वह पर्वत बेहद सुनहरे रंग का था । ऐसा लग रहा था जैसे सोने का बना हुआ पहाड़ हो । बादल बिखरे हुए थे । सिर्फ वह चोटी जिस पर हम लोग खड़े थे बादलों के ऊपर उठी हुई थी और वहां से हम लोग स्पष्ट सूर्य भगवान को देख पा रहे थे ।
दोबारा कीबुलाकी ने मेरा हाथ पकड़ा और मुश्किल से 5 या 10 सेकंड बीते होंगे हम वापस उसी बौनों की बस्ती में वापस आ गए । वह एक अद्भुत और

अविस्मरणीय दृश्य था जिसकी याद करते ही आज भी मेरा पूरा शरीर रोमांच से भर जाता है ।

इस पूरी प्रक्रिया में लगभग 3 दिन निकल चुके थे ।

अब समय था मेरी शक्तियों के परीक्षण का.....

कीबुलाकी मुझे लेकर स्टेज जैसी जगह पर आ गए । वहां वह आपने जगह पर बैठ गए । मुझे अपने बगल में बैठा लिया ।

उन्होंने कहा - मुझे पता है कि मैंने जो प्रक्रिया संपन्न की है । वह सही है । लेकिन फिर भी मैं चाहता हूं कि तुम अपनी शक्तियों का प्रयोग करके देखो , ताकि मैं यह सुनिश्चित कर सकूं कि तुम्हारे शरीर में जो आवश्यक परिवर्तन मैं चाहता था वह हो चुके हैं ।

मैंने पूछा - मुझे क्या करना है ?

उन्होंने कहा - अभी इस बस्ती में लगभग साढे तीन सौ लोग रहते हैं । तुम्हें अपनी मानसिक शक्तियों का प्रयोग करते हुए सारे पुरुषों को यहां इकट्ठा होने के लिए

आदेश देना है । साथ ही यह भी आदेश देना है कि कोई भी महिला अपने झोपड़ी से बाहर ना निकले । यदि कोई बाहर है तो वह अपनी झोपड़ी में चली जाए ।

मेरे लिए एक बिल्कुल नई प्रक्रिया थी इसलिए मैंने फिर से कीबुलाकी से पूछा - यह मैं कैसे करूंगा ?

उन्होने बताया - तुम्हें अपने मस्तिष्क मे ध्यान केंद्रित करते हुए इस बस्ती को अपने मस्तिष्क में देखना है । जो बात मैंने कही है । उस बात को इस बस्ती के हर एक हिस्से को मन मे देखते हुए प्रसारित कर देना है । अर्थात सोचना है कि वह बात बस्ती के हर कोने तक प्रसारित हो रही है । हर एक व्यक्ति के पास तक पहुंच रही है .....

अगर तुम्हारे अंदर की शक्तियां जागृत हुई तो ऐसा करते ही 10 मिनट के अंदर तुम्हारा मनोवांछित कार्य संपन्न होगा ।

मैंने ध्यान लगाया । थोड़ी ही देर में मेरा ध्यान लग गया । मैंने उस बस्ती को अपने मानस मे एक चित्र के रूप में

देखा और उसके बाद भावनात्मक रूप से कीबुलाकी के द्वारा कहे गए संदेश को मानसिक रूप से प्रसारित करना प्रारंभ कर दिया ।

लगभग 10 मिनट के अंदर सारे पुरुष स्टेज के सामने आकर खड़े हो गए । मैंने आँखें खोली तो देखा स्टेज के चारों तरफ मधुमक्खी के छत्ते के जैसे बोने खड़े हुए है । कीबुलाकी ने मेरी तरफ मुस्कुरा कर देखा । जैसे वे संतुष्ट हो गए हो ।

मैंने पूरी पुष्टि करने के लिए और आंखें फाड़ कर देखा कि वाकई में सारे पुरुष ही हैं या कोई महिला भी आई हुई है । सचमुच सारे के सारे पुरुष थे । उसके बाद मैंने बस्ती की ओर नजर दौड़ाई कि मेरे निर्देश के अनुसार सारी महिलाएं घर के अंदर है या कोई बाहर दिख रही है ।

अद्भुत आश्चर्य ..... एक भी महिला उस बस्ती में झोपड़ी के बाहर नहीं दिख रही थी । जबकि सामान्यत: 25-50 महिलाएं बाहर इधर-उधर घूमती हुई दिख जाती थी ।

यहां तक की बात ने यह तो साबित कर दिया कि मुझे सिद्धि हासिल हो गई थी ।

अब मैं केवल अपने मन में सोच कर किसी के भी द्वारा कोई भी कार्य संपन्न करवा सकता था । अब उसके बाद मुझे कीबुलाकी के निर्देशानुसार उनका कार्य संपन्न करना था । उन्होने मेरी तरफ संतुष्टि भरे भाव से देखा और सारे लोगों को मेरे बारे मे बताया । सारे लोगों ने झुक कर मुझे प्रणाम किया । उसके बाद सभा विसर्जित हो गयी ।

मुझे वापस उसी झोपड़ी में पहुंचा दिया गया । उसके बाद के सारे दिन संतानोत्पत्ति का एक सूत्री कार्यक्रम चलता रहा । इस दौरान अंदाजन लगभग 25 से 30 महिलाओं के साथ संसर्ग हुआ होगा ।

इस दौरान मुझे केवल एक विशेष प्रकार का पेय पीने के लिए दिया जाता था । वह भी केवल दिन में दो बार । एक सूर्योदय के समय और दूसरी बार सूर्यास्त के समय । वह भी एक छोटे से प्याले में जो मुश्किल से एक या दो मिली लीटर का होगा । उसे पीते ही ऐसा

लगता था जैसे पूरा शरीर आग से तप रहा हो । उसके बाद शरीर कांपने लगता था बिलकुल वैसे ही जैसे मलेरिया का मरीज करता है । कपकपी छूटते ही पूरे शरीर से पसीना निकलने लगता था । जो महिला उस पेय को लेकर आती थी वह एक चादर जैसी चीज से पूरे शरीर को ढक देती थी । थोड़ी देर में पसीना सूख जाता था । पसीना सूखते तक शरीर वापस ठंडा हो जाता था उस पेय को पीने के बाद पूरे शरीर में ताकत का आभास होता था । भूख भी नहीं लगती थी । यही नहीं शरीर भी हमेशा बिलकुल तैयार रहता था ।

उसके बाद जो दस दिन का समय गुजरा वह कैसे गुजरा पता ही नहीं चला । कुल जमा 13 दिन बीत चुके थे और अब दो दिन बाकी थे । कीबुलाकी ने बताया था कि उनका गर्भकाल दस दिन का होता था । उस हिसाब से अगर गर्भ ठहरा होगा तो पहले संतान के होने का समय आ चुका था....

अगले दिन यानि चौदहवें दिन लगभग दोपहर के समय मुझे मिलने के लिए किबुलाकि आए ।

उन्होंने कहा - तुम्हारी पहली संतान का जन्म हो चुका है । कल पता चल पाएगा कि हम अपने प्रक्रम में कितने सफल हुए हैं ।

वह दिन उसी प्रकार से संशय और असंशय के बीच गुजरा । अगले दिन की उत्सुकता मन में थी कि नया शिशु उस सिद्धि से युक्त होता है या नहीं ।

उन बौनों का गर्भकाल केवल 10 दिन का होता था और शिशु एक दिन में ही चलना फिरना और बोलना चालू कर देता था । अगले दिन शाम को कीबुलाकी एक महिला और उसका बच्चा तीनों झोपड़ी में आए ।

उसके बाद कीबुलाकी ने मुझसे कहा कि उस बच्चे के साथ मानसिक संपर्क बनाने का प्रयास करो । मैंने कोशिश की और 1-2 असफलता के बाद मैं उसके साथ मानसिक संपर्क बनाने में कामयाब हो गया । उसके बाद मैंने उससे कई बार उठने और बैठने के लिए मानसिक रूप से कहा । जिसका उसने अक्षरश: पालन किया । इसका मतलब वह मानसिक संदेशों को समझ पा रहा था ।

अब उसकी मानसिक संदेश भेजने की क्षमता को चेक करने की बारी थी ।

मैंने उससे मानसिक रूप से कहा - अब तुम मुझसे मानसिक रूप से संपर्क करने की कोशिश करो । वह घबरा रहा था । उसने कोशिश की । लेकिन वह मुझसे मानसिक संपर्क नहीं बना पाया । इससे हम लोग थोड़े निराश हो गए । फिर मुझे एक उपाय सूझा । मैंने उसे अपनी माता से मानसिक संपर्क बनाने के लिए कहा । उस महिला को भी मैंने समझाया कि बच्चा उससे मानसिक संपर्क बनाने की कोशिश करेगा । अगर संपर्क बनता है तो बताये ।

बच्चे ने प्रयास किया 8 - 10 बार के प्रयासों में उसे असफलता ही हाथ लगी । कीबुलाकी के चेहरे पर चिंता और तनाव स्पष्ट दिखाई दे रहा था । बच्चा भी परेशान हो चुका था । फिर उसकी मां ने उसे दूध पिलाया । कीबुलाकी ने दोनों को बाहर जाने के लिए कहा । कीबुलाकी चिंतित थे कि उनके उपाय से काम क्यों नहीं बन रहा है । उन्होंने मुझसे कहा कि और दो तीन बच्चों को देख लेते हैं ।

शाम का समय था मैं उसी झोपड़ी में था । जब कीबुलाकी दोबारा उसी महिला और बच्चे के साथ वापस लौटे । उनके चेहरे की मुस्कान बता रही थी कि कुछ अच्छा घटित हुआ है ।

उन्होंने मुस्कुराते हुए बताया - इसने अपनी माता के साथ मानसिक संपर्क स्थापित कर लिया । मैंने भी क्षमता का परीक्षण कर लिया है ।

यह मेरे लिए भी राहत की बात थी । क्योंकि जितनी जल्दी उनकी आवश्यकता पूर्ण हो जाती । उतनी जल्दी वह मुझे वापस भेज देते ।

जैसा कि आप लोग भी महसूस करते होंगे कि कितने भी सुख सुविधा के साथ आप रह ले लेकिन अपना घर अपना घर होता है । मुझे भी अपने घर की याद आ रही थी ...

सच कहूं तो मैं लगभग इस प्रक्रिया से ऊब चुका था । वास्तविकता यह है कि आपको अगर जलेबी का एक पीस मिल जाए तो आप उसका स्वाद लेते हुए मजा

लेते हुए खाते हैं । लेकिन सुबह शाम आपको खाने में केवल जलेबी मिले तो तीन-चार दिन के बाद आपको उससे उच्चाटन होने लगेगा । मेरे जैसे अगर 10-15 दिन मिल जाए तो जलेबी का नाम सुनते ही आप वहां से भाग खड़े होंगे । मैं भी लगभग उस स्थिति तक पहुंच चुका था । अब जितनी जल्दी हो सके वहां से बच निकलने की संभावनाएं सोच रहा था ।

मेरी मानसिकता से कीबुलाकी भी अपरिचित नहीं थे । इसलिए जितनी मुस्कुराहट इस बात को बताते हुए उनके चेहरे पर आ रही थी उससे बड़ी मुस्कुराहट मेरे चेहरे पर आ चुकी थी । इस सफलता का मतलब था कि जो प्रोजेक्ट उन्होंने अपने हाथ में लिया था वह पूरा हो चुका था । इसके बाद मैं यहां से जाने के लिए स्वतंत्र था । मेरे लिए यह बहुत खुशी की बात थी....

उस दिन तीन और बच्चों का जन्म हुआ । अगले दिन यानी 15 वें दिन कीबुलाकी ने उनका भी परीक्षण किया और सभी इस क्षमता से युक्त मिले ।

अब बारी थी मेरी वापसी की ....

लेकिन सवाल यह था कि क्या मेरी वापसी इतनी आसान थी...

मैंने कीबुलाकी से कहा - अब तो आपका कार्य पूर्ण हो चुका है अब मुझे वापस भेज दे ।

उन्होंने मेरी बात का कोई जवाब नहीं दिया और झोपड़ी से निकलकर बाहर चले गए ।
मैंने उनके मस्तिष्क को पढ़ने की कोशिश की लेकिन वहां तक पहुंच नहीं पाया । शायद उन्होंने उसे प्रतिबंधित कर दिया था । आप मेरी हालत समझ सकते हैं । मैं घबरा गया कि कहीं वह मुझे यहीं पर रोकने की तैयारी में तो नहीं है ...

लेकिन वैसा नहीं था ।

लगभग 2 घंटे के बाद वह वापस मेरी झोपड़ी में आए और मुझसे बोले - मैंने तुम्हें 15 दिन रुकने के लिए कहा था और आज 15 दिन पूरे हो चुके हैं । लेकिन ..... जो मेरा लक्ष्य था वह अभी पूरा नहीं हुआ है । मैं चाहता हूं

कि एक बार मैं अपनी आंखों से देख लूं कि यह बच्चे मेरे ग्रह से संपर्क स्थापित कर पाते हैं .....

मैंने पूछा - आप क्या कहना चाहते हैं ।

वह बोले - मैं एक बार पराक्रम्य यंत्र पर 9 बच्चों को बैठाकर बुध ग्रह से संपर्क स्थापित करने का प्रयास करना चाहता हूं । मैं चाहता हूं तुम भी उस समय मेरे साथ मौजूद रहो । मैं तुम्हारे ऊपर किसी प्रकार का दबाव नहीं डालूंगा लेकिन अगर तुम साथ में रहोगे तो मुझे अच्छा लगेगा ।

मैं इनकार नहीं कर पाया और सहमति में सिर हिलाया । इस सहमति का मतलब था कि कुछ दिन और उसी जगह रुकना पड़ेगा ।

अगले चार दिन में बच्चों की संख्या 14 तक पहुंच गई । अब पर्याप्त बच्चे हो चुके थे जिनको बैठाकर परीक्षण किया जा सकता था ।

इक्कीसवें दिन 9 बच्चों को अपने साथ लेकर कीबुलाकी और मैं वापस उसी खोह की तरफ निकल

पड़े । लगभग 100 मीटर अंदर जाने के बाद वह रहस्यमय तालाब आ गया । जिसमें झरना गिर रहा था । झरने के पानी को पार करते हुए हम लोग जब अंदर घुसे तो वहां पर एक और दरवाजा बना हुआ था । उस दरवाजे से हम सभी अंदर घुस गए ।

करीब 100 मीटर अंदर जाने के बाद एक बड़ा सा हाल नुमा कक्ष था । जो किसी मंदिर के गर्भ गृह जैसा दिख रहा था । उसकी छत मीनार की तरह नुकीली थी और उसका आकार कुछ-कुछ प्याज के जैसा था ।

सबसे अंदर में प्याज के आकार का एक छोटा सा पारदर्शी कक्ष था और उसके बाद उसके चारों तरफ उससे थोड़े थोड़े आकार में बड़े प्याज जैसे कक्ष बने हुए थे । यह कुछ-कुछ वैसा ही था जैसे एक कटोरी अपने से बड़ी कटोरी के अंदर रखी हुई है । हर प्याज नुमा कक्ष के बाहर गलियारा था । उस गलियारे में एक दरवाजा था ।

गलियारे में अलग-अलग जगहों पर छोटी स्टूल जैसी चीज रखी हुई थी । जो किसी अजीब सी धातु की बनी

हुई थी । वह धातु कुछ-कुछ सोने के जैसी लगती थी लेकिन उसमें बीच-बीच में काले रंग की धारियां भी थी ।

सबसे बीच वाले कक्ष में एक नीले रंग का चमकीला शिवलिंग जैसा आकार रखा हुआ था । जिसमें से रोशनी की किरणे बाहर निकल रही थी । प्याज जैसे बने हुए सारे कक्ष काँच जैसी किसी वस्तु के थे , इस वजह से वह नीली रोशनी सारे गलियारों में बिखरी पड़ी थी ।

मैंने गिनती की ..... तो वह कुल मिलाकर दस कक्ष थे । एक बीच वाला कक्ष । जिसमें वह शिवलिंग रखा हुआ था । उसके बाहर बाहर कुल मिला कर नौ .... गलियारों के हर एक स्टूल में कीबुलाकी ने एक-एक बच्चे को बैठा दिया ।
अब बारी थी संपर्क स्थापित करने की.....

कीबुलाकी ने सभी बच्चों को अपना अपना ध्यान उस शिवलिंग के ऊपर केंद्रित करने के लिए मानसिक संकेत दिया । अब मैं भी कीबुलाकी के मस्तिष्क के अंदर के

विचारों को पढ़ पा रहा था संभवत उन्होंने प्रतिबंध हटा लिया होगा । सभी बच्चे उस शिवलिंग पर अपना ध्यान केंद्रित करने लगे ।

यह एक प्रकार से त्राटक जैसी क्रिया थी । त्राटक अपने ध्यान को एकाग्र करने का एक तरीका है । जो हिप्नोटिज्म में भी काम में लाया जाता है । इसमें विभिन्न प्रकार के उपक्रमों में अपने नेत्रों के द्वारा एकाग्र चित्त होकर बिना पलक झपके देखा जाता है । इससे धीरे धीरे मानसिक शक्ति बढ़ने लगती है । इसमें प्रमुख रूप से बिंदु त्राटक जिसमें कागज के बीच में एक काली बिंदी लगाकर उसके ऊपर ध्यान केंद्रित किया जाता है और शक्ति चक्र में त्राटक सबसे ज्यादा प्रयोग किए जाते हैं ।

त्राटक के साथ में जो प्रमुख सावधानी रखनी होती है वह यह है कि इसका अभ्यास नियमित रूप से करना जरूरी होता है । साथ ही विचार में शुद्धता और पवित्रता के साथ-साथ खान पान में भी संयम बरतना जरूरी होता है ।

खैर.... यह एक अलग विषय है इस पर चर्चा और कभी...

हमारे देखते-देखते लगभग 10 मिनट के बाद शिवलिंग का आकार बड़ा होने लगा। वह लगभग अपने मूल आकार का 4 गुना बड़ा हो गया।

कीबुलाकी ने मुझसे कहा - जब संपर्क स्थापित हो जाएगा तो इस शिवलिंग का रंग बदल कर लाल हो जाएगा।

चार गुना आकार का हो जाने के बाद शिवलिंग का आकार बढ़ना बंद हो गया। हमारे देखते देखते नीला रंग धीरे-धीरे हरे रंग में परिवर्तित हो गया। मैंने कीबुलाकी की तरफ प्रश्नवाचक निगाहों से देखा। उन्होंने मुझे शांत रहने का इशारा किया। वह शायद उन बच्चों से लगातार मानसिक संपर्क में थे। बच्चे अभी उस शिवलिंग की ओर लगातार ध्यान से देख रहे थे। थोड़ी देर में शिवलिंग हरे रंग से बदलकर पीले रंग का हो गया। लगभग आधे घंटे में पीला रंग गाढ़ा होते होते लाल रंग मे बदलने लगा और तकरीबन 1 घंटे के बाद वह शिवलिंग पूरे लाल रंग का हो गया। सुर्ख खून जैसा लाल....

उसके लाल होते ही अचानक गड़गड़ाहट जैसी आवाज आने लगी । ऐसा लग रहा था जैसे धरती के भीतर कुछ हो रहा हो । लगभग 5 मिनट बाद एक झटका सा लगा और उस गुफा की छत किसी ढक्कन की तरह खुल गई ।

वह प्याज नुमा संरचना आसमान की ओर उठ गई । सारे बच्चे उस संरचना के अंदर थे । हम दोनों शून्य में उसके साथ साथ जा रहे थे । कीबुलाकी तो सिद्ध पुरुष थे उनका जाना स्वाभाविक था । लेकिन मैं भी अपने आप उसके साथ ऊपर जा रहा था ।

लगभग एक या डेढ़ किलोमीटर ऊपर उठे होंगे । अब बादल हमारी नीचे दिखाई दे रहे थे और हम बादलों के ऊपर थे । सूरज की तीव्रता उस प्याज नुमा संरचना से टकरा रही थी । वहां जाकर वह स्थिर हो गई । उसके स्थिर होते ही थोड़ी देर में वह दीवाल जो सूरज की तरफ थी वह धीरे-धीरे पारदर्शी से बदलकर सफेद रंग की होने लगी । ऐसा लग रहा था जैसे सूरज की किरणों के प्रभाव से ऐसा हो रहा हो ।

बच्चे अभी भी उसी प्रकार लगातार उस शिवलिंग की ओर देख रहे थे । जो सुर्ख लाल रंग का था ।

कीबुलाकी आंख बंद करके ध्यान अवस्था में बैठे हुए थे ।

केवल मैं ऐसा था जो उत्सुकता..... अविश्वास..... संशय..... जिज्ञासा..... सारे भावों को एक साथ लेता हुआ ..... हर तरफ देख कर..... सब कुछ अपनी आंखों से ..... अपने अंदर समा लेने की कोशिश करता हुआ ..... बैठा था ।

जो भी मेरे सामने घटित हो रहा था ! वह अद्भुत था ! आश्चर्यजनक था ! और मेरी कल्पना से परे था ! लेकिन वह मेरे सामने घटित हो रहा था...

धीरे-धीरे सूरज की तरह वाली दीवाल पूरी तरह से सफेद हो गई और सूरज की किरने अब सीधे हमारी तरफ नहीं आ रही थी । वह कुछ-कुछ हमारे प्रोजेक्टर के लिए लगाए जाने वाले पर्दे जैसा हो गया था । हमारी भाषा में कहें तो संभवतः वह शिवलिंग प्रोजेक्टर के जैसा कोई उपकरण रहा होगा जो मानसिक शक्तियों के द्वारा संचालित होता होगा ।

उस सफेद पर्दे में धीरे धीरे दृश्य उभरने लगे । सामने जो दृश्य दिखाई दे रहा था वह किसी वैज्ञानिक

प्रयोगशाला की तरह दिख रहा था । उसमें अनेक प्रकार के उपकरण दिखाई दे रहे थे और उसके बीच में एक वैसी ही प्याज जैसी संरचना दिख रही थी जैसा हम लोग अपने साथ लेकर चल रहे थे । उसमें भी 9 लोग बैठे हुए थे । संपर्क बनते ही उन लोगों के चेहरे पर भी खुशी की लहर दौड़ गई .॥

अघोरानंद और बौनों की बस्ती-6

मैंने देखा कीबुलाकी भी भावुक हो गए थे । कीबुलाकी ने बुध गृह वासियों को सारी बातें बताई कि किस प्रकार से नई पीढ़ी संपर्क स्थापित करने में अक्षम साबित हो रही थी । जिसके बाद उन्होंने मुझसे संपर्क किया और मेरे चक्रों को जागृत करने के बाद योग के द्वारा बच्चों को जन्म दिलाया । जिनमें पराक्रम्य सिद्धि जन्म से मौजूद है ।

दूसरी तरफ के लोगों ने मुझसे भी मानसिक संपर्क बनाया और धन्यवाद भी दिया । उसके बाद वह संपर्क सभा विसर्जित की गयी । वह दीवाल धीरे-धीरे वापस पारदर्शी हो गई ।

उसके बाद वह प्याज जैसी संरचना वापस उसी जगह पर आ गई जहां से वह ऊपर गई थी । अब धीरे-धीरे

बीच में रखे हुए शिवलिंग का रंग बदलने लगा और अंत में वह वापस नीले रंग का हो गया ।
बच्चे भी अपने इस अनुभव से बेहद खुश थे ।
किबुलाकी ने मुझे गले से लगा लिया और फिर हम सभी लोग मिलकर नाचे । वहां से निकलकर बस्ती में पहुंचने की जल्दी सबसे ज्यादा बच्चों को थी .....
वह अपने अपने परिजनों को इस सफलता के विषय में बताना चाहते थे । तो हम लोग जल्दी जल्दी वापस लौटे गुफा के बाहर बस्ती के लोग इकट्ठा खड़े थे ।

कीबुलाकी तथा बच्चों के चेहरे में छलक रही खुशी को देखकर वे समझ गए कि हम अपने प्रयास में सफल रहे हैं । सभी लोगों ने खुशी के साथ हम सबका स्वागत किया । देर रात तक उत्सव का दौर चलता रहा और उसके बाद सारे लोग सो गए ।

अगले दिन सुबह कीबुलाकी मुझे लेकर अपनी झोपड़ी में पहुंचे। उनकी झोपड़ी में मैं पहली बार आ रहा था ।
झोपड़ी में दो कक्ष थे । सामने वाले कक्ष में वह लोगों से मिलते थे । अंदर वाले कक्ष पर ताला लगा जाता था

। उस कक्ष के अंदर क्या है उस बस्ती के लोगों ने भी नहीं देखा था ।

सामने वाले कक्ष मे कीबुलाकी अपने आसन पर बैठ गए और मुझे भी अपने सामने बिठा लिया । उनके अपने कक्ष में ले जाने और अपने सामने बिठाने के अंदाज से तथा उनके चेहरे पर फैली हुई गंभीरता से मैं समझ गया कि वह किसी गंभीर विषय पर चर्चा करने वाले हैं ।

मेरे अंदर थोड़ी घबराहट भी थी क्योंकि अभी सबसे गंभीर विषय मेरे वापस जाने का ही था । इस सफलता के बाद अगर मैं कीबुलाकी की जगह में होता तो शायद मैं भी कोशिश करता कि इस बंदे को वापस ना जाने दो ।

उन्होंने बोलना प्रारंभ किया - अघोरानंद, तुमको वापस अपनी पूर्व स्थिति में पहुंचाने के लिए बहुत सारी क्रियाओं को वापस करना पड़ेगा । मैंने जो तुम्हारा त्रिनेत्र जागृत किया है वह बंद करके तुमको वापस एक सामान्य बौने में परिवर्तित करने के बाद ही मैं तुम्हें मानव रूप में वापस ला सकता हूं ।

मैंने मन ही मन सोचा इसका मतलब मेरे पास जो भी सिद्धियां प्राप्त हुई है ! मेरा त्रिनेत्र जागृत हुआ है ! सहस्त्रार जागृत हुआ है वह सब लुप्त हो जाएगा ।

कीबुलाकी ने मेरे मन में उठ रहे भावों को पढ़ते हुए कहा - हां ! वह सारी सिद्धियां लुप्त हो जाएंगी। अब तुम तय करो कि यहां रहना चाहोगे ? इस महासिद्ध रूप में या फिर सामान्य रूप में अपने समाज में लौटना चाहोगे ?

यह एक बड़ा गंभीर और जटिल प्रश्न था । सिद्धियां अभूतपूर्व थी । जिसे प्राप्त करने के लिए कई वर्षों की या यूं कह दीजिए कई जन्मों की साधना लगती थी । जिसे उन्होंने महज 3 दिनों में मेरे लिए संभव बना दिया था । उन सिद्धियों को छोड़ने के लिए वह कह रहे थे । तभी मैं वापस अपने पुराने आकार में आ सकता था ।

मैं गंभीर धर्म संकट में फंस गया । एक तरफ अतुलनीय सिद्धियां थी लेकिन बौना शरीर था । ढाई सौ तीन सौ लोगों की एक बस्ती में जीवन गुजारना था । दूसरी तरफ मेरा मानव जीवन था । अपने पुराने परिचित और

अपना वही समाज था । जहां पर में पैदा हुआ और बड़ा हुआ ।

मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या जवाब दूं ? मैंने आंखें खोली तो सामने कीबुलाकी बैठकर मुस्कुरा रहे थे ।

मैं काफी देर तक सोच विचार करता रहा और अंततः इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि यहां पर रहने से बेहतर होगा कि मैं वापस अपने मानव आकार में अपने समाज में चला जाऊं । उसके बाद कीबुलाकी से मैंने कहा - मैं वापस अपने समाज में लौटना चाहूँगा ।
कीबुलाकी ने मुझे फिर से कहा - तुम्हें अभी जो भी सिद्धियां प्राप्त हुई है । वह सारी की सारी लुप्त हो जाएंगी । तुम्हारा सहस्त्रार चक्र भी वापस सामान्य हो जाएगा । मुझे शल्यक्रिया के माध्यम से तुम्हारे माथे पर लगी कील को भी वापस निकालना पड़ेगा तभी तुम वापस सामान्य बन पाओगे । उसके बाद मैं तुम्हें तुम्हारे मूल आकार में लौटा पाऊंगा । क्या तुम इसके लिए तैयार हो ?

कीबुलाकी ने मुझे फिर से असमंजस की स्थिति में डाल दिया था । उसी असमंजस के साथ मैंने सहमति में सिर हिलाया ।

सहमति में सिर हिलाना बहुत आसान नहीं था । एक साधक होने के नाते सहस्त्रार सिद्धि उसके जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य होता है जिसके बाद वह स्वयं शिवस्वरूप हो जाता है । मैं उस स्थिति तक पहुंच चुका था । वहां से सामान्य मानव के रूप में वापस लौट जाना एक बेहद कठिन निर्णय था ।

इस निर्णय में जो चीज मेरे लिए सबसे ज्यादा सहायक बनी थी वह था मेरा अपने गुरु तथा अपनी कपालिनी सहित समस्त शक्तियों से संपर्क का टूट जाना । जब से मैं बोना बना था तब से मैं चाह कर भी अपने गुरु से संपर्क स्थापित नहीं कर पा रहा था । मुझे ऐसा लग रहा था जैसे कीबुलाकी की शक्तियां मुझे उस संपर्क से रोक रही थी ।

वैसे तो आप लोगों को भी पता होगा कि मैं एक सामान्य मानव था जिसे गुरुदेव ने साधनाओं के माध्यम से दिव्य शक्तियों का साक्षात्कार कराया था ।

मैं इस तथ्य को जानता था कि...

गुरु गोविंद दोऊ खडे काके लागूं पांय ।
बलिहारी गुरु आपकी गोविंद दियो बताय ॥

अर्थात, यदि गुरु के साथ स्वयं गोविंद अर्थात साक्षात भगवान भी सामने खडे हों, तो भी गुरु ही प्रथम सम्मान का अधिकारी होता है, क्योंकि उसीने तो यह क्षमता प्रदान की है कि मैं गोविंद को पहचानने के काबिल हो सका।

मैं अपने गुरु के बिना अपने अस्तित्व की कल्पना भी नहीं कर सकता था । उनसे संपर्क नहीं हो पाना मेरे लिए अपने जीवन की सबसे बड़ी न्यूनता थी और मैं वैसी स्थिति में नहीं रहना चाहता था । इसलिए वापस अपने मानव रूप में जाने की इच्छा को स्पष्ट रूप से कीबुलाकी को कह दिया ।

इसके बाद की बुलाकी मुझे लेकर साथ में लेकर अपनी झोपड़ी के अंदर वाले कक्ष में ले गए । कक्ष के अंदर एक देवी प्रतिमा रखी हुई थी । जो बुलाकी अर्थात महाकाली की थी । उन्होंने वहां पहुंचते ही महाकाली के सामने नमन किया । मैंने भी नमन किया । वह मूर्ति

लगभग 3 फुट ऊंची थी । वह मूंगे जैसे किसी चीज से बनी हुई थी और एकदम लाल रंग की थी । उसे देखते ही श्रद्धा का भाव मन में जागृत हो जाता था । वह बेहद तेजस्वी और प्रभावशाली मूर्ति थी । मूर्ति के सामने एक थाली थी जिसमें कई प्रकार के गोल गोल शिवलिंग जैसे पत्थर रखे हुए थे । सारे पत्थर बेहद चमकीले थे । उनका आकार मटर के दानों जैसा था ।

कीबुलाकी अपने आसन पर बैठ गए और अपनी भाषा में मंत्र जप करने लगे । थोड़ी देर में सारे दाने हवा में ऊपर उठने लगे और उस प्रतिमा के चारों ओर चक्कर लगाने लगे । अलग-अलग रंग के दाने थे , इसलिए ऐसा महसूस होता था जैसे उस मूर्ति के चारों तरफ अलग-अलग रंग के छल्ले घूम रहे हो ! ठीक शनि ग्रह के ऊपर के छल्लो की तरह ! मंत्र जाप चलता रहा और वह छल्ले घूमते रहे .....

धीरे-धीरे मूर्ति का रंग लाल से काला होने लगा और होते होते एकदम कोयले के जैसे काला रंग हो गया । उसके साथ ही जो दाने चारों ओर घूम रहे थे वह सारे के सारे मूर्ति में समाहित हो गए और लुप्त हो गए ।

किबुलाकी आंखें बंद करके अभी मंत्र जाप में संलग्न थे और मैं आंखें खोल कर इस अद्भुत दृश्य को देखने में .....

इस प्रकृति में और तंत्र साधना के क्षेत्र में असंभव से असंभव भी घटित हो सकता है यह मैं जानता था । हर बार एक अद्भुत घटना से साक्षात्कार होना वास्तव में बेहद रोमांचक होता है .....

अब तक वह मूर्ति पूरी तरह से गहरे काले रंग की हो चुकी थी ....

कमरे के अंदर एक छोटा सा दीपक जल रहा था । जिसकी रोशनी कमरे में फैली हुई थी । जैसे-जैसे मूर्ति काली होती गई वह रोशनी मध्यम होती गई . जब वह पूरी तरह से काली हो गई तब उस दीपक की रोशनी भी जैसे लुप्त सी हो गई.....

दीपक जलता हुआ दिख रहा था लेकिन उसमें से एक पतली धागे जैसी लकीर उस मूर्ति की ओर बढ़ती हुई बस दिखाई दे रही थी बाकी पूरा प्रकाश गायब था ।

ऐसा लग रहा था जैसे प्रकाश की किरणें तक उस मूर्ति में समाहित हो जा रही है ।

मैं आंखें फाड़ फाड़ कर उस अद्भुत दृश्य को देखता रहा .....

तभी कीबुलाकी ने मुझे थपकी लगाई और स्वयं दंडवत मुद्रा में लेट गए । मुझे वापस होश आया और मैं भी दंडवत मुद्रा में उस दिव्य मूर्ति के सामने लेट गया ।

ऐसा महसूस हो रहा था जैसे उस मूर्ति के अंदर प्राण आ गए हो । कुछ क्षणों के बाद पूरा कमरा स्वच्छ सफेद प्रकाश से भर गया । हम दोनों उठकर खड़े हो गए । जो मूर्ति गहरे काले रंग की हो गई थी वह अब स्फटिक के जैसे श्वेत पारदर्शी दिखाई दे रही थी । उसमें से प्रकाश की किरणें निकलकर हम दोनों के ऊपर ठीक वैसे ही पड़ रही थी जैसे टोर्च की रोशनी पड़ती है । लगभग 5 या 10 सेकंड तक वह स्थिति रही होगी ...

उसके बाद प्रकाश का धमाका जैसा हुआ और हम दोनों की आंखें चौंधिया गई मैं बेहोश होकर गिर गया उसके बाद क्या हुआ मुझे पता नहीं चला.....

संभवत: कीबुलाकी अपनी देवी के दर्शन कराना चाहते रहे हो और यह मेरा सौभाग्य था कि उस दिव्य शक्ति के दर्शन हुए....

जब मुझे होश आया तो मैं वापस उसी पुरानी झोपड़ी में पड़ा हुआ था । मैं उसी प्रकार निर्वस्त्र अवस्था में लेटा हुआ था । मेरे ऊपर लाल रंग का कोई लेप लगा हुआ था जो कुछ गेरू जैसा लग रहा था ....

कुछ देर के बाद एक महिला ने किसी पत्ते को निचोड़कर मेरी आंखों में एक-एक बूंद डाला । मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे आंख में मिर्ची का पाउडर झोंक दिया गया हो । मैं बुरी तरह से चीखने लगा, लेकिन मेरे हाथ पैर बंधे हुए थे और इतनी मजबूती से बंधे हुए थे कि मैं अपनी जगह से हिल भी नहीं सकता था ।

थोड़ी देर में एक और महिला तथा दो पुरुष अंदर आए । महिला के हाथ में एक चिमटे जैसी वस्तु थी और दोनों पुरुषों के हाथ में चमकते हुए चाकू जैसे हथियार थे । जो लगभग दो-दो तीन-तीन इंच की रही होगी । एक पुरुष मेरे बाएं तरफ बैठ गया और दूसरा पुरुष मेरे दाएं तरफ बैठ गया । मेरे पैर के अंगूठे से उन्होंने चीरा लगाना चालू किया । हर चीरे के साथ मुझे ऐसा लगता है जैसे वहां से खून की धारा बह निकली हो । दोनों एक एक हिस्से में कुछ कुछ दूरी पर चीरा लगाते हुए मेरी गर्दन तक आ गए थे । उसके बाद उन्होंने मेरी गर्दन के दोनों तरफ चीरा लगाया ।

अंत मे खोपड़ी के ऊपरी हिस्से के दोनों और चाकू की नोक को हलके से दबा दिया और उस महिला ने एक झटके से लगे हुए आलपिन को खींच लिया । वहां से भी खून की धारा बहने लगी और मुझे उसी अवस्था में छोड़कर वे बाहर निकल गए ।

खून के निकलने की वजह से हो रही कमजोरी कहिए या डर का एहसास , थोड़ी देर के बाद मुझे बेहोशी छाने लगी । उसके बाद क्या हुआ ... मुझे पता नहीं चला ।

यह सब होते होते शाम का समय हो चुका था । सूरज ढलने जैसी स्थिति में था । हल्का-हल्का अंधेरा छाने लगा था ।

उसके बाद जब मुझे होश आया शायद दोपहर का समय रहा होगा क्योंकि अच्छी धूप निकली हुई थी । जब मैंने आंख खोली तो देखा कि मेरे पूरे शरीर पर पत्तियां बंधी हुई थी । वह पत्तियां काफी बड़ी बड़ी थी लगभग एक 1 फुट के आकार की .... जो कुछ-कुछ सागौन के पत्तों जैसी दिख रही थी .... लेकिन सागौन के पत्तों की तुलना में काफी मोटी गूदे दार और गहरे हरे रंग की थी ।

शरीर में अभी भी कमजोरी छाई हुई थी.....

कुछ देर में उनकी हरकतों को देखता रहा । बंधी हुई पत्तियों के ऊपर सफेद रंग का कोई पाउडर वे छिड़क रहे थे । यह पाउडर कुछ-कुछ चूने जैसा दिखाई दे रहा था लेकिन वह चुना नहीं था । जहाँ पत्तियों पर वह पाउडर पड़ता था वहां से धुए जैसा निकलने लगता था और उस हिस्से में बेहद तेज गर्मी जैसा आभास लगता था । आधे

घंटे तक मैं उन चीजों को देखता रहा फिर कमजोरी की वजह से शायद मैं बेहोश हो गया ।

दोबारा जब होश आया तो रात का अंधेरा छा चुका था । मेरी आंखें बड़ी मुश्किल से खुल रही थी । मैंने देखा कि मैं वापस अपने मानव आकार में आ चुका था । सारी पत्तियां फट कर अलग हो चुकी थी । मैं वापस अपनी लंबाई को प्राप्त कर चुका था ।

मैं आपको बता नहीं सकता कि उस समय मुझे कितनी खुशी हुई । मुझे उस क्षण के सामने स्वर्ग भी फीका लग रहा था .....

मैं उठकर बैठना चाहता था लेकिन शरीर में ताकत ही नहीं है ऐसा लग रहा था ....
यहां तक कि अपने हाथ पैर हिलाने में भी मुझे तकलीफ महसूस हो रही थी । काफी कोशिश करने के बाद अपने हाथ की उंगलियों को मुश्किल से मैं हिला पा रहा था । कीबुलाकी तभी उस कक्ष में आए और उन्होंने अपने हाथ में रखे हुए कटोरे से कोई गाढ़ा द्रव मेरे मुंह में डाल दिया । उसे पीते ही मुझे ऐसा लगा जैसे कि शराब पी

ली हो और कुछ ही समय के बाद मैं वापस नशे की वजह से धुत्त होकर बेहोश हो गया । अब आप सोच सकते हैं कि उसमें कितना नशा रहा होगा मुश्किल से एक या दो मिलीलीटर की कटोरी रही होगी । उसे मेरे मुंह में डालते ही मैं अपनी सुध बुध खो बैठा ।

फिर जब होश आया तो सुबह की सफ़ेद चादर फैलने लगी थी ।
हल्की हल्की रोशनी चारों तरफ बिखर रही थी । मेरे कमरे में उस समय कोई भी नहीं था ।

जैसा कि मैंने आपको बताया था वह झोपड़ी बाकी की तुलना में थोड़ी बड़ी जरूर थी लेकिन इतनी बड़ी नहीं थी कि मैं उस में खड़ा हो पाता । इसलिए दरवाजे से सरक कर बाहर निकला बाहर आकर जब मैं खड़ा हुआ और अपने शरीर को देखा तो एक अनिर्वचनीय सुख का आभास हुआ कि मैं वापस अपने मूल रूप में आ गया हूं ...

सबसे पहले मैंने अपने गुरु को याद किया और सुखद आश्चर्य मेरे मानस पटल पर उनका बिम्ब दिखाई देने

लगा । मैंने मन ही मन उनको साष्टांग दंडवत प्रणाम किया ,,,, उनका हाथ उठा आशीर्वाद की मुद्रा में और फिर वे मुसकुराकर लुप्त हो गए .... इतने दिनों में पहली बार गुरुदेव के दर्शन हुए थे और उनके दर्शन मात्र से ही मेरा मन उत्साहित उत्तेजित सब एक साथ हो गया था । गुरु के दर्शन अपने आप में एक साधक के लिए जीवन का सौभाग्य होता है ।

मैं बाहर निकल कर चलता हुआ उसी स्टेज के पास पहुंच गया । कीबुलाकी अपने निर्धारित स्थान पर ध्यान मग्न अवस्था में बैठे थे । मैं मुश्किल से 20 25 कदम चला लेकिन मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैंने कई किलोमीटर की दौड़ लगा ली हो । शरीर पूरी तरह से थक चुका था और ऐसा लग रहा था कि मैं गिर जाऊंगा .....

किसी तरह से अपने आप को संभालता हुआ मैं उनके बगल में जाकर बैठ गया । 10:15 मिनट के बाद उनका ध्यान टूटा .... मेरी ओर देखकर बोले - अघोरानंद ! अब तो तुम खुश हो !

मैंने उनकी तरफ देखकर हाथ जोड़ दिए और कहा - बाबा मैं वाकई आज बहुत खुश हूं ! क्या मैं आज वापस जा सकता हूं ?

कीबुलाकी ने कहा - अभी तुम्हारे शरीर में शक्ति पूरी तरह से वापस नहीं लौटी है । कुछ औषधियों का सेवन कराना बाकी है । एक दिन और तुम्हें रुकना पड़ेगा ।

उसके बाद वह मुझे लेकर उस रहस्यमय खोह में चले गए वहां सुर्ख तालाब के अंदर उन्होंने दोबारा से मुझे स्नान कराया और उसके बाद वापस बस्ती में आ गए । उन्होंने मुझे उसी झोपड़ी में लेटे रहने के लिए कहा और उठने से मना कर दिया,,,,

मैं वापस झोपड़ी में जाकर लेट गया । हर 1 घंटे के बाद एक पुरुष बोना आता और मेरे मुंह में कोई द्रव पदार्थ डालकर चला जाता । वह पूरा दिन उसी प्रकार से गुजरा । हर बार जब वह द्रव मेरे शरीर में जाता तो मुझे ऐसा महसूस होता जैसे शक्ति बढ़ रही हो ।

शाम होते होते मुझे वापस सामान्य होने जैसा एहसास होने लगा । शाम को वही दो पुरुष अलग प्रकार की औषधि का बर्तन लेकर आए और उसका लेप मेरे पूरे शरीर पर कर दिया । कुछ विचित्र सी जड़िया जलाकर उसका धुआं उन्होंने कमरे में फैलाना प्रारंभ कर दिया । लगभग 5:10 मिनट तक मैं सांस लेता रहा उसके बाद फिर होश खो बैठा .....

अगले दिन सुबह नींद खुली । कीबुलाकी मेरी बगल में बैठे हुए हैं आंख खुलते ही मैंने उनको देखा प्रणाम किया ।

उन्होंने सर पर हाथ फेरा और कहा - बेटा अब तुम वापस जाने के लिए तैयार हो ।

दिक्कत यह थी कि मैं जो कपड़े पहन कर आया था वह झील में स्नान करते समय उतार चुका था । यहां पर किसी के कपड़े मेरे साइज के आने वाले नहीं थे । ऐसी स्थिति में सोच कर मैं परेशान था ।

अन्य रचनाएँ :-

1. तांत्रिक अघोरानंद ।
2. अघोरानंद की अप्सरा ।
3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।
4. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।
5. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।
6. अघोरानंद और छाया की माया ।
7. अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।
8. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।
9. अघोरानंद और भैरवम भीषणम ।
10. अघोरानंद और बौनों की बस्ती ।
11. परेतिन की शादी ।